हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 30 नवंबर 2025

10 मंत्रोच्चारण के बीच अंतरराष्ट्रीय गीता...

10 जनस्वास्थ्य विभाग गांव की पेयजल समस्या का...

बढ़ते ट्रैफिक दबाव एवं सड़क हादसों को देखते हुए फोरलेन की सख्त आवश्यकता, लोगों में भी बढ़ रही मांग

नीरपुर से रघुनाथपुरा तक सिक्स लेन के बीच बना है सिंगल रोड, फोरलेन की जरूरत

पीडब्ल्यूडी विभाग नीरपुर से नारनौल तक की बढ़िया सड़क पर डाल रहे नया लेयर बना लोगों में चर्चा का विषय

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर के लगभग चारों तरफ सिक्स लेन वाले राष्ट्रीय राजमार्ग बन चुके हैं, लेकिन जैसे ही शहर की सीमा में प्रवेश करते हैं, वही मांग सिक्स लेन तो दूर, फोरलेन भी नजर नहीं आते। यही वजह है कि शहर की सीमा में प्रवेश करते ही सड़क हादसों का भय बना रहता है। यह स्थिति नेशनल हाइवे नंबर 11 पर नीरपुर तथा रघुनाथपुरा दोनों तरफ से है। इनके गांवों के बाहर दोनों तरफ ही नेशनल हाइवे के सिक्स लेन सड़क मार्ग बने हैं। कमाल की बात है कि बढ़ते ट्रैफिक दबाव एवं आए दिन हो रही सड़क दुर्घटनाओं के मद्देनजर नीरपुर से रघुनाथपुरा तक की सड़क को फोरलेन में तब्दील करने की जरूरत है, लेकिन इस तरफ पीडब्ल्यूडी विभाग एवं यहां के जनप्रतिनिधि कोई ध्यान नहीं दे रहे, जिससे लोगों में रोष बना हुआ है, जबकि इस सड़क को मरम्मत के नाम पर लगभग हर साल बार-बार नई लेयर डालकर उसे नया कर दिया जाता है।

उल्लेखनीय है कि नारनौल शहर के बीचोंबीच से नेशनल हाइवे नंबर 11 गुजरता है, जो देश की राजधानी दिल्ली को सीधे बॉर्डर पर राजस्थान के जिले जैसलमेर को जोड़ती है। यह सड़क नेशनल हाइवे नंबर 8 में धारूहेड़ा से गोद बलाहा तक हरियाणा की सीमा में सिक्स लेन रोड के रूप में विकसित की जा चुकी है तथा आगे का काम बाकी है। गौर करने वाली बात यह है कि जहां से शहर की सीमा शुरू होती है, यानि गांव नीरपुर से रघुनाथपुरा तक बीच की सड़क महज सिंगल रोड बनी हुई है और यह टुकड़ा नेशनल हाइवे अथोरिटी की बजाए पीडब्ल्यूडी विभाग के अधीन आता है। सिंगल रोड होने के कारण इस करीब सात किलोमीटर के दायरे में ज्यादातर शहर बसा हुआ है और यहां पर ट्रैफिक का बड़ा भारी दबाव रहता है। इस कारण यहां पर सड़क हादसों का हमेशा भय बना रहता है। हादसों के कारण यहां अनेक लोग अपनी जान गवां चुके हैं और अनेक घायल होकर दिव्यांग बन चुके हैं, जबकि नीरपुर से रघुनाथपुरा तक की सड़क को फोरलेन बनाने की बेहद सख्त जरूरत है।

नारनौल। नीरपुर रोड पर डाली जा रही नई लेयर व रेवाड़ी रोड, जिस पर है डिवाइडर एवं फोरलेन की जरूरत। फोटो : हरिभूमि

ये बोले अधिकारी

पीडब्ल्यूडी के जेई जितेंद्र शर्मा ने बताया कि रेवाड़ी रोड पर नया लेयर उस सड़क की अवधि पूरी होने उपरांत डाला जा रहा है, ताकि वह सड़क टूटने से बच सके। नीरपुर से रघुनाथपुरा सिक्स लेन मार्गों तक यह सड़क फोरलेन बनाने के लिए पर्याप्त जगह चाहिए। इसके लिए पहले जगह जुटानी होगी। जगह के लिए वन विभाग की जमीन अड़चन है तथा इसके लिए जनप्रतिनिधियों को सरकारी स्तर पर प्रयास करने होंगे।

मंगलवार को रहती है अत्यधिक भीड़

इस सड़क मार्ग पर गांव रघुनाथपुरा में फायरिंग रेंज पर हनुमान जी का मंदिर बना है। उस मंदिर में मंगलवार को आने-जाने वाले श्रद्धालुओं की बहुत भारी भीड़ रहती है। दुपहिया वाहन, ऑटो तो क्या, श्रद्धालु पैदल भी भारी संख्या में मंदिर इस मार्ग से पहुंचते हैं। इस कारण मंगलवार एवं शनिवार को तो यह सड़क भीड़भाड़ वाली रहती है और वाहन रेंगकर चलने का मजबूर होते हैं। ऐसे में नीरपुर से रघुनाथ के दोनों तरफ सिक्स लेन मार्ग तक इस सड़क को फोरलेन के रूप में विकसित करने की अत्यधिक जरूरत है।

फोरलेन में फोरेस्ट विभाग की अड़चन

इस सड़क मार्ग में नीरपुर की तरफ वन विभाग की जंगलात बनी हुई है तथा दूसरी तरफ कृषि विभाग कार्यालय एवं पब्लिक हेल्थ के जलाशय बने हुए हैं। कृष्णावति नदी के दायरे में स्थित जंगलात की जमीन वन विभाग के पास है। सड़क फोरलेन करने के लिए कुछ मीटर जमीन की दोनों तरफ आवश्यकता होगी। फोरेस्ट विभाग से जमीन लेने में बड़ी अड़चन यहां खड़े हरे पेड़-पौधे हैं, लेकिन जनता की जरूरत को देखते हुए यदि जनप्रतिनिधि विधायकों एवं सांसदों के साथ-साथ नगर परिषद भी रूचि दिखाए तो यह डिमांड सरकार से की जा सकती है।

ठीक सड़क पर डाली जा रही लेयर चर्चा का विषय

आजकल पीडब्ल्यूडी विभाग की ओर से नीरपुर से नारनौल के गंदे नाले तक सड़क बनी हुई है। यह सड़क देखा जाए तो काफी अच्छी स्थिति में थी, लेकिन पीडब्ल्यूडी विभाग वाले इस सड़क पर एक नई 40 एमएम की लेयर डाल रहे हैं, जिससे सड़क को नया रूप मिल गया है। इससे पहले पीडब्ल्यूडी ने ऐसा ही कार्य शहर में महावीर चौक के इर्द गिर्द की सड़कों का किया था, जहां सड़कें अच्छी बनी होने के बावजूद उन पर नई लेयर डाली थी। इसको लोग आश्चर्यचकित हैं कि सरकार टूटी सड़कों को सूधारती नहीं और अच्छी बनी बनाई सड़कों पर नई लेयर डालकर पैसा व्यर्थ पानी में बहा रही है। लोगों में सड़क पर नई सड़क बनाने को लेकर काफी चर्चाएं हैं और उनमें आक्रोश भी बना हुआ है।

खबर संक्षेप

आईटीआई महेन्द्रगढ़ में रोजगार मेला कल

नारनौल। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान महेन्द्रगढ़ में एक दिसंबर को आईटीआई पाससुदा छात्रों के लिए रोजगार मेला का आयोजन किया जाएगा। इसमें होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड मानेसर कंपनी के प्रतिनिधि साक्षात्कार के माध्यम से अप्रेंटिस के लिए चयन करेंगे। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति अनुसार एक दिसंबर को आयोजित जॉब मेला में फिटर, टर्नर, मशीनिस्ट, वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन, एमएमवी व पेंटर ट्रेड के छात्रों का अप्रेंटिस के लिए चयन किया जाएगा। साक्षरता के लिए विद्यार्थी अपने साथ रिज्यूम, मैट्रिक सर्टिफिकेट, आईटीआई सर्टिफिकेट, आधार कार्ड व पैन कार्ड, मोबाइल नंबर, ई मेल आईडी व दो पासपोर्ट साइज फोटो लेकर आएं।

महर्षि दयानंद चौक पर हवन कल

नारनौल। प्रत्येक माह की भांति इस माह भी एक तारीख यानि पहली दिसंबर को प्रातः 9 बजे वैदिक यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। प्रधान लक्ष्मीनारायण आर्य ने बताया कि कप्तान जगराम आर्य वेदोपदेशक एवं संयोजक के रूप में अपने विचार रखेंगे। भजनों के माध्यम से आर्य समाज की नीतियों का प्रचार करेंगे। जयनारायण यज्ञ की व्यवस्था करेंगे और यज्ञप्रेमी के रूप में समाजसेवी राकेश यादव नांगलिया वाले मौजूद रहेंगे। यज्ञ में रामस्वरूप बौहरा, सत्यदेव, पुरुषोत्तम आर्य एवं विनोद कुतबापुर वाले भी विशेष रूप से मौजूद रहेंगे।

ग्रामीण चौकीदारों की बैठक दो को

नारनौल। हरियाणा ग्रामीण चौकीदार एसोसिएशन की जिला स्तरीय बैठक दो दिसंबर लघु सचिवालय पार्क में होगी। एसोसिएशन के जिला प्रधान पंकज शोभापुर ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य जिले के सभी ब्लॉकों के चौकीदार भाइयों की समस्याओं को उपयुक्त समक्ष उठाना और इस संबंध में ज्ञापन सौंपना है। चौकीदारों की लंबित समस्याओं पर चर्चा कर उनके समाधान की मांग की जाएगी।

महेंद्रगढ़। लग्न समारोह में वर पक्ष को आशीर्वाद देते सहकारिता मंत्री। फोटो : हरिभूमि

तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था देश की आर्थिक मजबूती का शुभ संकेतः डॉ. अरविंद शर्मा

महेंद्रगढ़। भारत की जीडीपी ग्रोथ दूसरी तिमाही में 8.2 प्रतिशत होने पर प्रदेश के जेल एवं सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर बताने वालों के आरोपों पर यह आंकड़ा करारा जवाब है। वे शुक्रवार देर शाम महेंद्रगढ़ भाजपा मंडल के पूर्व अध्यक्ष एवं जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य विवेक खैरवाल की पुत्री के लग्न समारोह में पाली के एक मैरिज पैलेस में शामिल होने पहुंचे थे। डॉ. शर्मा ने कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में वास्तविक जीडीपी में 8.2 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान देश में तेजी से बढ़ती आर्थिक गतिविधियों और स्थिर अर्थव्यवस्था का संकेत है, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में यह वृद्धि 5.6 प्रतिशत थी। उन्होंने कहा कि सरकार और अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह देश की आर्थिक मजबूती का शुभ संकेत है। कार्यक्रम में विधायक कंवर सिंह यादव, कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा उर्फ राजू, सुरेश यादव कुराहवटा, सुदेश यादव, अमित भारद्वाज पाली सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

दरवाजा तोड़ मकान में घुसे चोरों ने लाखों का सामान चुराया

हरिभूमि न्यूज ⏭ नांगल चौधरी

निजामपुर रोड पर स्थित बर्तनों की दुकानों पर निर्मित दो चौबारों के दरवाजे तोड़कर दुकानों में घुसे अज्ञात चोरों ने लाखों रुपये चुरा लिए।

- सीसीटीवी कैमरा उखाड़कर बनाया रास्ता

साथ ही उन्होंने सीसीटीवी कैमरे उखाड़ दिए, ताकि चेहरा रिकार्डिंग होने का खतरा नहीं रहे। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना का जायजा लिया तथा पड़ोसियों के सीसीटीवी कैमरे की मदद वारदात की छानबीन आरंभ कर दी।

पीड़ति रमेश कुमार ने बताया कि बंसल बर्तन भंडार के नाम से दुकान खोल रखी है। दुकान के ऊपर ही आवासीय चौबारा है, जिसमें कोई रहता नहीं है। बीती शाम दुकान को सही सलामत बंद करके घर गया था, लेकिन रात को चौबारे का दरवाजा तोड़कर अज्ञात चोर दुकान में घुस गए। गल्ले में दो दिन बिक्री का कैश करीब 35 हजार रुपये रखे थे, जिन्हें चोरों ने चुरा लिया। जनरल स्टोर संचालक पवन कुमार ने बताया कि यहां भी चोरों ने चौबारे का दरवाजा तोड़कर दुकान में घुसने की जगह बनाई है। गल्ले में करीब 80 हजार रुपये रखे हुए थे, जो चोरी हो गए हैं।

नांगल चौधरी। अज्ञात चोरों द्वारा चौबारों के तोड़े गए दरवाजे। फोटो : हरिभूमि

चौराहे व मुख्य प्वाइंटों पर कैमरे हैं, लेकिन चालू नहीं

दुकानदारों ने बताया कि मोहनपुर निवासी समाजसेवी सुधीर चौधरी ने शहर के प्रमुख चौराहे तथा मुख्य प्वाइंटों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाए थे। जिनकी मदद से सालभर शहर में अपराधिक वारदातों पर अंकुश रहा था, लेकिन अब सालभर से कैमरे चालू नहीं, जिस कारण अपराधिक तत्व बेखौफ हो गए। उन्होंने पुलिस प्रशासन से सभी कैमरों को चालू करने की गुहार लगाई है, ताकि वारदात को ट्रेस करने में सुविधा रहे।

उन्होंने बताया कि चौबारा की सीढ़ियों में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं, लेकिन अज्ञात चोरों ने चेहरा छुपाकर कैमरे का उखाड़ दिया। इसके बाद सुविधा पूर्वक वारदात को अंजाम दिया गया है। सुबह दुकान खोलने पर पूरा सामान इधर उधर बिखरा हुआ मिला। संदेह होने पर गल्ले को चेक किया। जिसमें नकदी गायब मिलने पर पुलिस को सूचना दी गई है। थाना इंचार्ज ने विभिन्न तकनीकी उपकरणों की मदद से वारदात को ट्रेस करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी।

नारनौल। चोरी के बाद बिखरा पड़ा सामान।

चोरों ने नकदी व आभूषण चुराए

नारनौल। मोहल्ला गुदड़ी में अज्ञात चोर घर से नकदी व आभूषण चोरी कर ले गए। इस बारे में पीड़ित जितेंद्र यादव ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 26 नवंबर रात करीब 11 बजे पत्नी व बेटा घर में सो रहे थे। इसी दौरान रात को अचानक उनकी पत्नी को घर में शोर सुनाई दिया, जिससे उनकी नींद खुल गई। जब उन्होंने देखा तो तीन अज्ञात व्यक्ति घर के अंदर चोरी करते हुए दिखाई दिए। जांच करने पर संदूक में रखी लगभग 65000 रुपये की नगदी, तीन चांदी की पाजेब, चार चुटकी, तीन सोने की चेन, एक जोड़ी जुमकी व दो मोबाइल फोन गायब मिले।

बवाना-सेहलंग मार्ग पर मिला व्यक्ति का शव

कनीना। सदर थाना अंतर्गत गांव बवाना-सेहलंग मार्ग पर शनिवार सुबह एक व्यक्ति का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। मृत व्यक्ति की पहचान 60 वर्षीय सज्जन सिंह वासी पोता के रूप में हुई है। इस बारे में पोता गांव निवासी जोगेंद्र सिंह ने सदर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसका पिता सज्जन सिंह एक माह पूर्व ताऊ के पास गुजरात गया था। उसे शनिवार सुबह सूचना मिली कि बवाना-सेहलंग मार्ग पर एक व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। उसने अपने परिवार वालों के साथ मौके पर जाकर देखा तो उसका पिता सज्जन सिंह था। जोगेंद्र सिंह ने पुलिस को बताया कि सज्जन सिंह पैदल अपने घर की ओर आ रहा था कि मार्ग में अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी और फरार हो गया। जिससे उसके पिता की मृत्यु हो गई। सदर थाना इंचार्ज सज्जन सिंह ने कहा कि मृतक के पुत्र की शिकायत पर हादसे के आरोपित अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

नपा की टीम ने बाजारों से हटाया अतिक्रमण

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

बाजार में बढ़ती अव्यवस्था के कारण नगर पालिका के अतिक्रमण हटाओ दस्ते ने शनिवार को अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। दुकानों के बाहर रखे गए सामान को नगर पालिका टीम ने जब्त कर दुकानदारों व रेहड़ी फड़ी वालों को अतिक्रमण न करने के लिए सख्त हिदायत दी। नगर पालिका की चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा ने कहा कि दुकानदारों की ओर से अतिक्रमण से शहर की व्यवस्था बिगड़ रही थी। उन्होंने दुकानदारों को चेतावनी देते हुए कहा कि अतिक्रमण किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे दुकानदारों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लायी जाएगी।

उन्होंने कहा कि दुकानदार अतिक्रमण न करते हुए अपनी हद में दुकान का सामान रखे। जिससे बाजार सुंदर और व्यवस्थित नजर आए तथा बाजार में आने वाले नागरिकों को परेशानी का सामना न करना पड़े। डॉ. रिंपी लोढ़ा ने कहा कि शहर में अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को पहले भी चेतावनी दी जा चुकी है।

उन्होंने दुकानदारों से अतिक्रमण न करने की अपील करते हुए शहर को सुंदर व स्वच्छ बनाने में सहयोग की बात कही है। नगर पालिका सचिव कपिल कुमार ने बताया कि नपा प्रशासन की ओर से पहले से ही मुनादी करवाकर दुकानदारों को सूचित कर दिया गया था। नपा के आदेशों को अनदेखा व अनसुना करने वाले दुकानदारों के तकत, रेहड़ी, तिरपाल, फ्लेक्स बोर्ड व अन्य सामान जब्त किया गया है। उन्होंने कहा कि आमजन को समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए भविष्य में अतिक्रमण हटाओ अभियान जारी रहेगा। टीम में सुरेंद्र कुमार, राकेश कुमार शामिल थे।

कनीना। अतिक्रमण हटाते नगर पालिका कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

युवकों ने व्यक्ति को पीट पीटकर किया घायल

महेंद्रगढ़। पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास तीन चार युवकों ने एक व्यक्ति को पीट-पीटकर घायल कर दिया। वारदात की यह घटना पास लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जिसमें तीन चार युवक एक व्यक्ति को लाठी डंडे से पीट रहे हैं। पीड़ित ने सिटी पुलिस में शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। संगम विहार कॉलोनी निवासी राजेश जांगड़ा ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 24 नवंबर को शाम करीब 5:15 बजे वह बाजार से घर की तरफ आ रहा था। तभी तीन चार युवकों ने उनका रास्ता रोक लिया। वह उन युवकों को नहीं जानता है। उन्होंने आते ही लाठी डंडों से बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। हमलावरों ने हत्या के मकसद से उस पर जानलेवा हमला किया गया है और लाठी डंडों से चोट मारी। उनमें एक व्यक्ति उसकी गर्दन पकड़कर नीचे गिराया रखा और गर्दन, छाती व पेट के नीचे वाले हिस्से पर कई चोटें मारी। बाकी अन्य हमलावरों ने लाठी डंडों से बहुत बार कई वार किए। वह जाते-जाते जान से मारने की धमकी भी देकर गए है।

महिला की मौत के बाद भी नहीं जागा प्रशासन, नप भी कर रही लीपापोती

बंदरों के आतंक से आम जनमानस का जीना दुश्वार

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर में पिछले दो-तीन सालों से बंदरों का काफी आतंक मचा हुआ है। धीरे-धीरे बंदरों की संख्या भी पहले की तुलना में तीन-चार गुना बढ़ चुकी है। करीब चार महीने पहले एक महिला को भी इन बंदरों के कारण अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था।

जिला प्रशासन एवं नगर परिषद समेत जनप्रतिनिधियों तक के सम्मुख समक्ष जनता कई बार गुहार भी लगा चुकी है, लेकिन शहरवासियों को इन बंदरों से निजात नहीं मिली है। मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने भी गत दिनों ग्रीवेंस कमेटी में मामला संज्ञान में आने के बाद कई बार नगर परिषद के अधिकारियों को बंदर पकड़ कर दूर छोड़ने के टेंडर निकालने के लिए कहा था, लेकिन आज तक इस मामले में कोई असर देखने को नहीं मिला। बंदर आज भी ज्यों के त्यों उछल-कूद करते नजर आते हैं।

शहर का कोई भी मोहल्ला या वार्ड आज इन बंदरों से अछूता नहीं है। छोटे बच्चों और महिलाओं पर अब ये हमला करने लगे हैं। हर रोज एक-दो व्यक्ति इनके शिकार घायल होकर हो रहे हैं।

अब तो इनके हौसले इतने बढ़ गए हैं कि ये अब घरों में घुसकर फ्रिज खोलकर, रसोई में घुस कर सामान उठा ले जाने लगे हैं। दोपहिया वाहनों पर कोई व्यक्ति जा रहा हो तो अचानक उस पर हमला कर घायल कर देना आमबात हो गई है।

नारनौल। बंदर ही बंदर। फोटो : हरिभूमि

शहरी क्षेत्र के हर गली मोहल्ले में पहुंच रहे बंदर

सर्वाधिक बंदर नागरिक अस्पताल के इर्दगिर्द दिखाई देते हैं। इसके साथ ही उपायुक्त निवास के सामने राजकीय कर्मचारी कॉलोनी, हुडा सेक्टर, कोर्ट कैंपस में भी इन बंदरों की भरमार है। शहर के अन्य मौहल्ले राव बंसीसिंह पार्क, फ्रांसखाना, देवस्थान, खड़खड़ी, चांदुवाडा, मिश्रवाड़ा, सराय आदि में शहर का कोई भी ऐसा मोहल्ला या गली नहीं है, जहां ये बंदर न हों। खाने की तलाश में कोई भी व्यक्ति हाथ में कुछ सामान लेकर जाता है तो ये उन पर झपट पड़ते हैं और आम व्यक्ति उनके हमले में लहुलुहान हो जाते हैं।

वाहनों में भरकर लाए, रेवाड़ी रोड पर जंगलात में छोड़ रहे बंदर

शहर के रेवाड़ी रोड से गुजरती कृष्णावती नदी पर वन विभाग की जंगलात बनी है। उस जंगलात में बाहर लोग रात के अंधेरे में वाहनों में भरकर इन बंदरों को छोड़ देते हैं। इस कारण आजकल चिंकारा रेस्ट हाउस समेत इसके आसपास बसी कॉलोनी में बंदरों की भरमार है। यहां के बंदर इतने खतरनाक हैं कि यह बाइक, स्कूटी वालों पर भी हमला कर देते हैं, जिससे कई लोग एक्सीडेंट हो चुके हैं। जागरूक लोगों कैलाश सैनी, रामौतार सैनी, सुभाष चंद, डा. महेंद्र यादव, मदनलाल सैनी, थावर सिंह सैनी आदि ने जिला प्रशासन व नगर परिषद अधिकारियों से मांग की है कि इसके टेंडर तुरंत कॉल करने का आदेश जारी करें और शिकारियों को बुलाकर इन बंदरों को पकड़ के दूर कहीं जंगलों में छोड़ा जाए, ताकि शहर की जनता सुख और शांति से अपना जीवन जी सके।

सीमेंट टाइलों से बनेगा गुढ़ा लिंक मार्ग

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

कनीना महेंद्रगढ़ स्टेट हाईवे 24 से गुढ़ा को लिंक करने वाला सड़क मार्ग सीमेंट टाइलों से बनाया जाएगा। यह कार्य सप्ताहभर में पूरा होने का अनुमान है। लोक निर्माण विभाग की ओर से इस दिशा में लगभग कार्य पूरा कर लिया गया है। बता दें कि जुलाई, अगस्त माह में बारिश के चलते यह सड़क लगभग पूर्णतया जर्जर हो गई। सड़क में बने गड्ढों से हादसों की संभावना बनी हुई है। लोक निर्माण विभाग की ओर से बजट मंजूर होने के बाद टेंडर अलॉट करने के बाद वर्क आर्डर जारी कर दिए गए हैं।

बता दें कि कनीना में अटेली सड़क मार्ग पर रेवाड़ी, सादुलपुर रेलवे लाइन पर बनाए जा रहे आरओबी के कारण दर्जनभर गांवों के ग्रामीण व वाहन गुढ़ा से गुजर रहे हैं। बढ़ते यातायात दबाव के कारण सड़क बदहाल हो चुकी है। इसके अलावा कनीना महेंद्रगढ़ सड़क मार्ग एनएच 152 डी बुचावास तक कमोबेश टूट चुका है। रामपुरी रजवाहे उन्हाणी के समीप लीकेज साइफन तो सिंचाई विभाग के विश्राम गृह के समीप डोहान नदी के पानी से सड़क खंडित हो चुकी है। इसी प्रकार दौंगड़ा अहीर से अटेली व महेंद्रगढ़ मार्ग जर्जर हो चुका है। नांगल मोहनपुर के समीप सड़क पर गंदा पानी जमा हो रहा है। गहरे गड्ढे बनने से सडक दुर्घटनाओं की संभावना बन रही है। इस बारे में लोक निर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता नवल कुमार ने बताया कि कनीना महेंद्रगढ़ मुख्य मार्ग से गुढ़ा सड़क की स्पेशल रिपेयर के टेंडर छोड़े जा चुके हैं। सीमेंटेड टाइल्स से इस मार्ग को सप्ताहभर में बना दिया जाएगा।

कनीना। गुढ़ा को लिंक करने वाली क्षतिग्रस्त सड़क।

नवंबर में जरूरी कामों को निपटाएं, 1 दिसंबर से नियम बदलेंगे

नवंबर महीना जल्द खत्म होने वाला है और कई सरकारी और वित्तीय कामों की आखिरी तारीख भी पास आ गई है। अगर आपने अभी तक ये काम पूरे नहीं किए हैं, तो 30 नवंबर से पहले पूरा कर लें। 1 दिसंबर से कई नियम बदल जाएंगे।

सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस चुनने की आखिरी तारीख

- सरकारी कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम चुनने की डेडलाइन 30 नवंबर है। पहले यह तारीख 30 सितंबर थी, लेकिन बाद में बढ़ा दी गई। यूपीएस, एनपीएस से अलग है और इसे चुनने का मौका सीमित समय तक ही है।
- पेंशनर्स के लिए लाइफ सर्टिफिकेट जमा करने की डेडलाइन
- पेंशनर्स को अपना लाइफ सर्टिफिकेट 30 नवंबर तक जमा करना होगा। इसे समय पर जमा न कराने पर पेंशन रोकने का खतरा हो सकता है।

टैक्स फाइलिंग और जरूरी रिपोर्ट

- अक्टूबर 2025 में टीडीएस कटने वाले टैक्सपेयर्स को सेक्शन 194-Iए, 194-Iबी, 194एम और 194एस के तहत बयान 30 नवंबर तक जमा करना अनिवार्य है। सेक्शन 92ई के तहत रिपोर्ट देने वाले टैक्सपेयर्स भी 30 नवंबर तक आईटीआर फाइल कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ग्रुप की कॉन्स्टीट्यूएंट एंटिटीज़ के लिए फॉर्म 3सीईएए जमा करने की आखिरी तारीख भी यही है।

एलपीजी सिलेंडर की कीमत में बदलाव

- ऑयल मार्केटिंग कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी की कीमतें अपडेट करती हैं। 1 दिसंबर को भी नए दाम लागू होंगे। 1 नवंबर को 19 किलो वाले कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमत 6.50 रुपए तक घटाई गई थी।

एविएशन टरबाइन फ्यूल की कीमत

- एलपीजी की तरह एटीएफ की कीमतों में भी हर महीने बदलाव होता है। 1 दिसंबर को एटीएफ के दाम बढ़ सकते हैं या कम हो सकते हैं। नवंबर खत्म होने से पहले इन जरूरी कामों को पूरा करना बेहद जरूरी है, क्योंकि 1 दिसंबर से नियम और तारीखें बदल जाएंगी।

स्टॉक मार्केट की नब्ज पकड़ना नहीं आसान, इन बातों का रखें विशेष ध्यान

निवेश मंत्रा
विनोद गौतम

दरअसल अनिश्चितता से भरे शेयर ट्रेडिंग में भावों के उतार-चढ़ाव को समझना ही सबसे बड़ी चुनौती होती है। जो ट्रेडर यह समझते हैं कि मुनाफा कमाना बड़ा लक्ष्य है, वे अक्सर घाटा खाते हैं, जबकि भावों की भाषा को पढ़ने वाले कुल मिलाकर फायदे में रहते हैं, क्योंकि किसी भी शेयर के भावों में ही छिपा रहता है उसका भूत, वर्तमान और भविष्य, बस इसे पढ़ने के लिए सधी और पैनी नजर चाहिए। अब सवाल है कि भावों की भाषा पढ़ी कैसे जाए। इसका एक प्रमुख माध्यम है टेक्निकल एनालिसिस।

टेक्निकल एनालिसिस का क्या है अर्थ

टेक्निकल एनालिसिस का अर्थ है किसी स्टॉक के मार्केट डाटा का सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी संभावित कीमत का अनुमान लगाना। इसमें मुख्य रूप से दो बातों पर गौर किया जाता है। भाव और ट्रेडिंग की मात्रा यानी वॉल्यूम। सरल शब्दों में कहा जाए तो टेक्निकल एनालिसिस के तहत देखा जाता है कि किसी खास समय अवधि में किसी स्टॉक की कीमत में कितना उतार-चढ़ाव आया। इस अवधि में इसकी ट्रेड की गई संख्या में क्या कभी कोई बड़ा उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है।

नियमित व अनुशासित निवेश ही करें

इक्विटी मार्केट में निवेश एक अनुशासन है। इसे तोड़ने पर जोखिम उठाना पड़ सकता है। लेकिन यह देखा गया है कि निवेश के फैसलों में अपवाद को नियम मान लेने की चूक कई लोगों करते हैं। मसलन, आम धारणा है कि इक्विटी फंड में एकमुश्त निवेश नहीं करना चाहिए। इक्विटी फंड में निवेश एसआईपी के जरिये करना चाहिए, ताकि समय के साथ लागत की एवरेजिंग होती रहे। ऐसा करने के कई फायदे हैं। फिर भी, कई लोगों के पोर्टफोलियो इस नियम का पालन नहीं करते हैं और वे इसकी वजहें भी बताते हैं कि मुझे एक बार में यह रकम मिली थी और किसी ने मुझे बताया कि इसे एकबार में ही इस फंड में लगा देना चाहिए या मुझे पता है कि सेक्टर फंड्स से अभी परहेज करना चाहिए, लेकिन यह तो साफ दिख रहा है कि इंफ्रास्टक्चर का हाल बेहतर होने वाला है, तो मैंने इंफ्रा फंड में एक बार में ही मोटी रकम लगा दी या इक्विटी में उतार-चढ़ाव होता रहता है, लिहाजा मैंने एफडी में 10 साल के लिए यह रकम लगा दी। ये तो एफडी की तरह ही हैं। ये तमाम तर्क टिपिकल हैं और इनमें से ज्यादातर मामलों में निवेशक ने सोच-समझकर निवेश नियमों का उल्लंघन करने का निर्णय किया होता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद को अपनी तर्क बुद्धि से या सलाहकार की मदद से यह समझा ले जाते हैं कि मौजूदा हालात में आम नियम का रास्ता छोड़ना फायदेमंद होगा।

ऐसे समझें

निवेश में अनुशासन व नियमों को समझने के लिए यहां एक उदाहरण पेश है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का एक डॉक्यूमेंट है। 'पावर ऑफ टेन' के नाम से। इसे नासा के कंप्यूटर साइंटिस्ट गेरार्ड होल्जमैन ने तैयार किया था। इसमें सेफ्टी-क्रिटिकल सॉफ्टवेयर डिवप्प करने के 10 नियम बताए गए हैं। इसके रिसर्च के दौरान होल्जमैन ने पाया था कि अगर नियमों का पालन किया जाए, तो उन्हें कानून की तरह मानना होगा, न कि दिशानिर्देश की तरह। और कुछ ही नियमों का होना बेहतर है, जिनका कभी उल्लंघन न हो। निवेश पर यह उदाहरण बिल्कुल फिट बैठता है। कहने का मतलब कि निवेश के नियमों में अपवाद की कोई जगह नहीं है। हमेशा बुनियादी नियमों का पालन करना चाहिए। और यह नियम है कि इक्विटी में कभी भी एकमुश्त निवेश नहीं करें। न ही सीधे शेयर बाजार में और न ही म्यूचुअल फंड में। अपने पोर्टफोलियो में विविधता रखें, एसआईपी अपनाएं, नियमित निवेश का पैटर्न अपनाएं। कभी कभार हो सकता है कि ऐसे हालात बनें, जिनमें निवेश के बुनियादी नियमों के उल्लंघन से बेहतर रिटर्न मिले, लेकिन ऐसे मामले नाममात्र के ही होते हैं।

ट्रेडिंग के जरूरी सूत्र

1. ट्रेडर के लिए सबसे अहम है भावों की भाषा
2. टेक्निकल एनालिसिस से समझें भावों की धड़कन
3. टेक्निकल एनालिसिस में चार्ट का अध्ययन अहम
4. ट्रेडर को प्राइस व वॉल्यूम का आकलन करना चाहिए
5. टेक्निकल एनालिसिस से ट्रेंड अनुमान लगा सकते हैं

टेक्निकल व फंडामेंटल एनालिसिस में अंतर

फंडामेंटल एनालिसिस में जहां हम लंबे निवेश के नजरिए से कंपनी के अतीत और वर्तमान को कसौटी पर कसने की कोशिश करते हैं, वहीं टेक्निकल एनालिसिस मूल रूप से भावों की तात्कालिक गणना पर आधारित पद्धति है। इसका उद्देश्य ट्रेडर की मदद करना होता है। फिर चाहे वह ट्रेडर इंट्रा डे हो या फिर शॉर्ट टर्म ट्रेडर। फंडामेंटल एनालिसिस में हम कंपनी की आय, उसके द्वारा दिए गए लाभांश और शोध जैसी बातों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।

ऐसे करें एनालिसिस

टेक्निकल एनालिसिस में इनमें से कुछ संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसमें मुख्य रूप से कुछ विशेष टूल्स और तकनीक का इस्तेमाल किया जता है। इन विशेष साधनों में एक है चार्ट का अध्ययन। चार्टों के जरिए टेक्निकल एनालिसिस करने वाला ट्रेडर दो अहम चीजों पर ध्यान देता है- पहला प्राइस मूवमेंट और दूसरा शेयर का ट्रेंड। अगर कोई शेयर आपके द्वारा निर्धारित कीमत से दो फीसदी गिर भी जाता है तो मुमकिन है कि वह अपट्रेंड हो। यानी उसमें मुनाफा वसूली या किसी और वजह से थोड़े वक्त के लिए करेक्शन आया हो लेकिन वह जल्द ही फिर से रफ्तार पकड़ सकता है। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए हम समझने की कोशिश करते हैं कि किस सीमा के बाद कोई शेयर दिशा बदल सकता है।

कई तरह के चार्ट पैटर्न

टेक्निकल एनालिसिस में काम आने वाले चार्ट पैटर्न भी कई तरह के होते हैं। जैसे- हेड एंड शोल्डर, डबल टॉप या बॉटम वगैरह। इसके अलावा जो चीज टेक्निकल एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है, वह है मूविंग एवरेज। मूविंग एवरेज पर अलग से चर्चा करेंगे, फिलहाल हम आपको उसका एक परिचय देते चलें। मूविंग एवरेज का अर्थ है कि कोई शेयर किसी खास अवधि में किस औसत भाव के साथ मूव कर रहा था। इसका आकलन लगाने में हम कुछ और तकनीकी बिंदुओं पर गौर कर करते हैं, जैसे, सपोर्ट और रेजिस्टेंस। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए शेयर के भावों का अर्थशास्त्र समझने में मदद मिलती है।

शेयर बाजार में क्या है अपर सर्किट और लोअर सर्किट?

क्यों घटता-बढ़ता है शेयर का मूल्य?

सामान्य निवेशक इस बात को लेकर कभी कभी बहुत हैरान रहते हैं कि शेयर का मूल्य किस हिसाब से बढ़ता और घटता रहता है। शेयर का मूल्य दो कारणों से बढ़ता या घटता रहता है। पहला कारण शेयर की सप्लाई और डिमांड और दूसरा कारण कंपनी द्वारा मुनाफा कमाना या कंपनी का घाटा। लेकिन, अगर हम स्टॉक ट्रेडिंग में देखें तो शेयर की सप्लाई और डिमांड की वजह से अधिकतर शेयर का मूल्य घटता बढ़ता रहता है। जब भी शेयर की डिमांड बढ़ती है यानी ज्यादा लोग खरीदते हैं तो उसका दाम बढ़ जाता है। और, जब लोग शेयर को बेचना स्टार्ट कर देते हैं तब शेयर का मूल्य घटने लगता है यह इस तरह से काम करता है।

लोअर सर्किट को ऐसे समझें

मान लीजिए आपके पास किसी कंपनी का शेयर हैं। किसी वर्ष के दौरान उस कंपनी को किसी कारणवश घाटा लगना शुरू हो जाता है। ऐसे में आप उस कंपनी का शेयर बेचने लगेंगे। ऐसे ही बहुत से लोग जो उस कंपनी के शेयर को लिए होंगे वह भी बेचना शुरू कर देंगे। जब सब बेचना शुरू कर देंगे तो एक ही दिन में उस कंपनी का शेयर शून्य तक पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में शेयर का मूल्य एक निश्चित सीमा तक गिरे इसके लिए एमएसई तथा बीएसई स्टॉक एक्सचेंज ने कुछ नियम बनाए हैं। जिनके अंतर्गत जब किसी कंपनी में अचानक सब लोग शेयर बेचना शुरू कर दें तो एक निश्चित सीमा तक ही उस शेयर का मूल्य घटेगा। उसके बाद उस शेयर की ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। यह जो मूल्य घटने की सीमा है, उसे ही लोअर सर्किट कहते हैं।

कैसे काम करता है अपर सर्किट

अपर सर्किट को एक उदाहरण के जरिए समझते हैं। मान लीजिए कि आपके पास किसी कंपनी के शेयर हैं। उस कंपनी को खूब मुनाफा होता है या किसी कारणवश उस कंपनी में निवेशकों की रूचि बढ़ जाती है। ऐसे में उस कंपनी के शेयर का दाम खूब चढ़ने लगता है। ऐसे में किसी कंपनी के शेयर का मूल्य एक ही दिन में आसमान में पहुंच जाएगा। इसी हालत से बचने के लिए शेयर बाजार में अपर सर्किट का प्रावधान है। उस निश्चित मूल्य सीमा तक उस कंपनी के शेयर का दाम पहुंचते ही उसमें अपर सर्किट लग जाएगा और उसकी ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। जिस तरह से लोअर सर्किट पर 10, 15 और 20 फीसदी का नियम लागू होता है, वही नियम अपर सर्किट पर भी लागू होता है। लोअर सर्किट के तीन चरण होते हैं। यह 10 फीसदी, 15 फीसदी और 20 फीसदी की गिरावट पर लगता है। यदि 10 फीसदी की गिरावट दिन में 1 बजे से पहले आती है, तो बाजार में एक घंटे के लिए कारोबार रोक दिया जाता है। इसमें शुरुआती 45 मिनट तक कारोबार पूरी तरह रुका रहता है और 15 मिनट का प्री-ओपन सेशन होता है।

क्या आपके पीएफ अकाउंट में भी सितंबर-अक्टूबर का कंट्रीब्यूशन नहीं दिख रहा

उन सैलरीड कर्मचारियों को चिंता करने की जरूरत नहीं है जिनके पीएफ पासबुक में सितंबर और अक्टूबर 2025 की सैलरी से कटे पैसे अभी तक नहीं दिख रहे हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने कहा है कि ये सिर्फ एक अस्थायी तकनीकी दिक्कत है, जल्दी ठीक हो जाएगी। ईपीएफओ अपना नया और अपग्रेडेड इलेक्ट्रॉनिक चालान-कम-रिटर्न सिस्टम लॉन्च कर रहा है। इसलिए हाल के महीनों की पीएफ एंट्री फेज में डाली जा रही हैं। इसी वजह से कुछ लोगों की पासबुक में सितंबर-अक्टूबर के पैसे अभी गायब या अधूरे दिख रहे हैं।

पासबुक लाइट से होगी आसानी

बता दें कि ईपीएफओ ने हाल ही में 'पासबुक लाइट' नाम की नई सुविधा शुरू की है। इसमें आप देख सकते हैं कि आपके खाते में कितना पैसा जमा हुआ, कितना निकला और अभी कितना बचा हुआ है। मतबल जरूरी जानकारी के लिए आसान सुविधा शुरू की गई है। ये सुविधा मेंबर पोर्टल पर ही उपलब्ध है। इसके लिए अलग से पासबुक वाली वेबसाइट पर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही इससे ट्रैफिक ज्यादा होने पर भी सिस्टम हैंग भी नहीं होता और जल्दी जानकारी मिल जाती है।

ई-सेवा पोर्टल पर पीएफ पासबुक कैसे चेक करें

- यूएएन मेंबर ई-सेवा पोर्टल पर जाएं।
- अपना यूएएन, पासवर्ड डालें और ओटीपी से लॉगिन करें।
- डैशबोर्ड पर 'पासबुक लाइट' चुनें, वहां से स्टेटमेंट देखें या डाउनलोड करें।

उमंग ऐप पर पासबुक कैसे देखें

- उमंगऐप में लॉगिन करें।
- ईपीएफओ सर्विस सर्च करें और 'व्यू पासबुक' पर क्लिक करें।
- यूएएन डालें, ओटीपी से वेरीफाई करें, अपना मेंबर आईटी चुनें और ई-पासबुक डाउनलोड कर लें।

ऑनलाइन पीएफ क्लेम करने के लिए क्या-क्या चाहिए

- ऑनलाइन क्लेम डालने वाले मेंबर्स को ये चीजें पहले से पूरी करनी जरूरी हैं:
- यूएनएन एक्टिवेट होना चाहिए और उससे जुड़ा मोबाइल नंबर काम कर रहा हो।
- आधार लिंक और ओटीपी से वेरीफाई होना चाहिए।
- बैंक अकाउंट डिटेल्स ईपीएफओ में अपडेट होनी चाहिए।
- अगर सर्विस 5 साल से कम है और फाइनल सेटलमेंट करना है तो पेन भी लिंक होना चाहिए।

जैसे-जैसे ईपीएफओ नया सिस्टम पूरी तरह लागू करेगा, सितंबर-अक्टूबर 2025 के पीएफ पैसे जल्दी ही सभी की पासबुक में दिखने लगेंगे।

यूपीआई वेरिफिकेशन से लेकर 'स्पॉट ए स्कैम' टूल तक, निवेशकों को फ्रॉड से बचाने के लिए सेबी के सुझाव

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने आगाह किया कि नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित कारोबारी माध्यम की ओर आकर्षित कर रहे हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। बीएसई के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इस दौर में जहां गलत सूचनाएं तथ्यों से अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं, यह चुनौती और भी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि इसलिए, निवेशक सुरक्षा को मजबूत करना नियामक की प्रमुख प्राथमिकता बन गया है। योजनाओं की पहचान करने में और अधिक सहायता करने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल' पेश किया है, जो यूजर्स की ऑनलाइन प्रामाणिकता सत्यापित करने में मदद करता है। पांडेय ने बताया कि सेबी ने पिछले 18 महीनों में मेटा, गूगल, टेलीग्राम और एक्स सहित सोशल मीडिया एवं सर्च मंचों पर गैरकानूनी या भ्रामक ऑनलाइन सामग्री के एक लाख से अधिक मामलों को चिह्नित किया है। उन्होंने कहा कि इसके अनुरूप विनियमित संस्थाओं को सोशल मीडिया पर अनियमित सलाहकारों के साथ जुड़ने की अनुमति नहीं है, जिससे झूठे दावों व हानिकारक पेशकशों के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया

सेबी ने इन प्रयासों के तहत यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पेमेंट सिर्फ सेबी रजिस्टर्ड मध्यस्थों की प्रामाणिक यूपीआई आईडी पर ही किए जाएं। बाजार नियामक ने जांच सुविधा का भी विस्तार किया गया है जिससे निवेशक 'सेबी इन्वेस्टर' वेबसाइट और सारथी मोबाइल ऐप पर बैंक खातों की वास्तविकता की तुरंत पुष्टि कर सकते हैं। यह समझते हुए कि धोखाधड़ी की गतिविधि बिना किसी चेतावनी के हो सकती है निवेशक अब स्वेच्छा से अपने लेनेदने के खातों को 'फ्रीज' या 'ब्लॉक' कर सकते हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे 'हैक' किए गए डेबिट कार्ड को 'ब्लॉक' किया जाता है। यह विकल्प तत्काल सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

गारंटीड रिटर्न के वादे से रहें सावधान

कारोबार संबंधी धोखाधड़ी वाले ऐप विश्वसनीय लगते हैं, डिजिटल खाते वैधता का दिखावा करते हैं और पक्के रिटर्न का वादा करने वाली ऐसा योजनाएं पेश करते हैं जो कोई भी रेगुलेटेड मार्केट नहीं दे सकता। बाजार नियामक के प्रमुख ने खतरे की गंभीरता को दोहराते हुए कहा कि ऐसे ''नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित ट्रेड प्लेटफॉर्म की ओर आकर्षित करते हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अवैध कारोबार के मामले कोई छिटपुट घटनाएं नहीं हैं, बल्कि निवेशकों के विश्वास, जिज्ञासा और आकांक्षाओं का फायदा उठाने के समन्वित प्रयास हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि लोग 'अवसर की आड़ में धोखे' का शिकार न हों।

अलर्ट हर साल गुजरना पड़ता है इस प्रक्रिया से, जानकारी होना जरूरी

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट स्वीकार हुआ या नहीं, इस चिंता में हैं? ऐसे चुटकियों में करें चेक

पेंशन जारी रखने के लिए सालाना लाइफ सर्टिफिकेट जमा करना एक जरूरी काम होता है। लेकिन, बहुत से बुजुर्गों की सबसे बड़ी चिंता यही रहती है कि उनका डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बैंक या पेंशन डिपार्मेंट ने एक्सेप्ट कर लिया या नहीं। नीचे हम जानेंगे कि यह पूरा सिस्टम कैसे काम करता है, इसमें क्या-क्या जानकारी देनी पड़ती है। साथ ही इसमें सबसे जरूरी काम यह पता करना होता है कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हो गया या नहीं। लाइफ सर्टिफिकेट एक आधार आधारित डिजिटल सर्टिफिकेट है। इससे पेंशन लेने वाले व्यक्ति के जीवित होने की पुष्टि हो जाती है, वो भी बिना बैंक या डिपार्टमेंट के चक्कर लगाए। जैसे ही आप इसे बनाते हैं, यह इलेक्ट्रॉनिक तरीके से आपके पेंशन देने वाले बैंक या डिपार्टमेंट तक पहुंच जाता है। हर सर्टिफिकेट का एक अलग प्रमाण-आईडी नंबर होता है, जिससे आप और डिपार्टमेंट दोनों उसकी स्थिति देख सकते हैं।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनाते समय आपको ये जानकारी डालनी होती है

⏭ आधार नंबर और नाम ⏭ रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर ⏭ पेंशन पेमेंट ऑर्डर नंबर ⏭ पेंशन खाते का नंबर और बैंक का नाम ⏭ पेंशन मंजूर करने वाले डिपार्टमेंट और पेंशन देने वाले बैंक/डिपार्टमेंट का नाम ⏭ इसके बाद फिंगरप्रिंट, आंख की स्कैन या चेहरे की पहचान (बायोमेट्रिक) देनी जरूरी है। अगर कोई भी जानकारी गलत हुई तो सर्टिफिकेट रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए बहुत ध्यान से भरें, क्योंकि 30 नवंबर की डेडलाइन नजदीक है।

चेहरे की पहचान से कैसे बनाएं सर्टिफिकेट

अगर आप फेस ऑथेंटिकेशन तरीका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो आपके पास एंड्रॉयड फोन होना चाहिए। दो ऐप डाउनलोड करें **adhaarFaceRD** और **Jeevan Pramaan Face App**।

आगे ये करें : आधार से वेरीफाई करें, पेंशन की सारी डिटेल भरें साफ-साफ अपना चेहरा फोटो खिंचवाएं, काम पूरा होने पर आपके रजिस्टर्ड, मोबाइल पर मैसेज आएगा और डाउनलोड लिंक भी मिल जाएगा।

सबसे जरूरी: पता करें कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हुआ या नहीं , सर्टिफिकेट जमा करने के बाद यह जरूर चेक करें कि बैंक/डिपार्टमेंट ने उसे मंजूर किया है या नहीं। तरीका बहुत आसान है। ऑफिशियल वेबसाइट **jeevanpramaan.gov.in** पर जाएं, अपना प्रमाण-आईडी डालकर सर्टिफिकेट डाउनलोड करें, सर्टिफिकेट के सबसे नीचे मैसेज देखें, अगर लिखा हो कि पीडीए ने एक्सेप्ट कर लिया, मतलब काम हो गया।

अगर रिजेक्ट लिखा हो तो तुरंत नया सर्टिफिकेट सही जानकारी और बायोमेट्रिक के साथ बनवाएं।

अगर दिसंबर से पहले सही सर्टिफिकेट जमा नहीं हुआ तो पेंशन रुक सकती है। इसलिए अभी समय है, आज ही चेक कर लें और जरूरत पड़े तो दोबारा जमा कर दें।

पारिवारिक वसीयत में सही हिस्सा नहीं मिला? जानें, क्या है कानून और कोर्ट में क्या माना जाता है सबूत

परिवार में वसीयत को लेकर झगड़े अक्सर रिश्तों को बिखेर देते हैं। अगर वसीयत में हिस्से बराबर न हों या लगे कि कोई बाहर से दखल दे रहा था, तो मामला और उलझ जाता है। लेकिन कानून के मुताबिक, सिर्फ असमानता देखकर वसीयत को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहां बहुत मजबूत सबूत चाहिए। अगर परिवार पहले से ही सही कदम उठाएं, तो लंबी अदालती लड़ाई और पैसे की बर्बादी से बच सकते हैं। खैतान एंड कंपनी की पार्टनर ज्योति सिन्हा बताती हैं कि ऐसे मामलों में सही जानकारी होना जरूरी है, वरना छोटी-छोटी बातें नजरअंदाज हो जाती हैं।

छिपे हुए संकेत जो नजर नहीं आते

परिवार वाले अक्सर उन छोटे-छोटे इशारों को मिस कर देते हैं, जो वसीयत में गड़बड़ी की ओर इशारा करते हैं। सिन्हा कहती हैं कि अगर कोई फायदा उठाने वाला शख्स लंबे समय से टेस्टेटर (वसीयत बनाने वाला) के करीब रहा हो और फैसले प्रभावित करने की कोशिश करता दिखे, तो ये दबाव या अनुचित प्रभाव का संकेत हो सकता है। इसके अलावा, वसीयत में हस्ताक्षर में कुछ असामान्य हो, जैसे डॉक्टर का सर्टिफिकेट न होना जो दिमागी हालत की पुष्टि करे, या जहां काट-पीट हुई हो वहां इनिशियल्स न हों, तो ये चेतावनी के घंटे हैं। ये चीजें खुद-ब-खुद वसीयत को अमान्य नहीं बनातीं, लेकिन जांच की जरूरत बताती हैं। सिन्हा की सलाह है कि इन पर गौर करके जल्दी कदम उठाएं, क्योंकि वक्त बीतने पर सबूत गुम हो सकते हैं।

सबूत जुटाने की जल्दबाजी क्यों?

समय बहुत कीमती है ऐसे मामलों में। सिन्हा कहती हैं कि वसीयत बनाने के वक्त की घटनाओं का टाइमलाइन बनाएं, टेस्टेटर की शारीरिक और मानसिक स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। असली हस्ताक्षर के नमूने, फोटो, चिट्ठियां या ईमेल जैसे दस्तावेज रखें, जो ये साबित करें कि वसीयत प्राकृतिक है या संदिग्ध। परिवार अक्सर सोचते हैं कि उनके पास जो कागज हैं, वो बेकार हैं, लेकिन सिन्हा की राय है कि सब कुछ वकील को दिखाएं। वो तय करेंगे कि क्या काम आएगा। अगर देर की, तो महत्वपूर्ण चीजें खो सकती हैं।

अदालतें कैसे काम करती हैं?

जज लोग वसीयत पर दस्तखत करते वक्त की परिस्थितियों को गौर से जांचते हैं। सिन्हा बताती हैं कि क्या टेस्टेटर आजाद था, उसे सब समझ आ रहा था? बीमारी, नशा या कोई ऐसी चीज जो फैसले पर असर डाले, उसकी जांच होती है। अनुचित प्रभाव साबित करना काफी मुश्किल है, क्योंकि कानूनी स्तर ऊंचा है।

अगर वसीयत से बाहर कर दिया गया तो?

वसीयत से नाम कटना अकेले चुनौती का आधार नहीं होता। सिन्हा कहती हैं कि पहले देखें कि बिना वसीयत के संपत्ति कैसे बंटती। अगर कोई कानूनी वारिस 'अप्राकृतिक बहिष्कार' का दावा करता है, तो वो सेल्फ-अक्वायर्ड संपत्ति के लिए मुश्किल से मान्य होता है, लेकिन पैतृक संपत्ति के लिए काम कर सकता है। ऐसे में कोई कदम उठाने से पहले वकील से बात जरूर करें, क्योंकि मामला जटिल है।

खबर संक्षेप

युवती से मोबाइल छिनने में दो को 5-5 साल कैद

भिवानी । अदालत ने पैदल जा रही एक छात्रा से मोबाइल फोन छीनने के दो आरोपियों को पांच पांच साल की कैद की सजा सुनाई है। साथ ही आरोपियों पर 25 हजार 25 हजार रुपये का जुर्माना किया है। जुर्माना न भरने की सूरत में आरोपियो को अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बैंक कॉलोनी निवासी एक युवती ने थाना औद्योगिक क्षेत्र पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि वर्ष 2023 को शाम के करीब 7:00 बजे मिनी बायपास से अपने परिजन के घर पैदल पैदल जा रही थी जो जिम के पास पहुंचने पर मोटरसाइकिल सवार एक व्यक्ति उसके हाथ से मोबाइल फोन छीनकर ले गया था।

नशे के खिलाफ कार्यक्रम का हुआ आयोजन

तोशाम। गांव देवराला स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में नशे के खिलाफ जंग कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्राचार्य विकास महत्ता के निर्देश पर छात्राओं को संबोधित करते हुए नशे के खिलाफ वक्ताओं ने अपने विचार रखे। मुख्य रूपसे पधारे बाल योगी महंत दिवाली नाथ महाराज ने विद्यार्थियोंको संबोधित करते हुए कहा कि हम अपने मन में निर्णय कर ले की हम नशे जैसी बुराई को कभी नहीं अपनाएंगे।

बिजली पेंशनर्ज की मासिक बैठक 5 को

भिवानी। हरियाणा बिजली पेंशनर्ज वेलफेयर एसोसिएशन की जिला स्तरीय मासिक बैठक 5 दिसंबर को प्रातः 11 बजे कार्यकारी अभियंता सबरबन डिविजन के प्रांगण में जिला प्रधान बाल मुकंद बापोड़ा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। यह जानकारी देते हुए जिला महासचिव आरके चावला ने बताया कि पेंशनर्ज के काफी समय से रूके हुए कार्यों को करवाने के लिए निगम के अधिकारियों पर दबाव डालने के उदेश्य से रखी गई है। इसी प्रकार अगली बैठक कार्यकारी अभियंता आपरेशन सिटी डिविजन के प्रांगण में रखी जाएगी।

अंग्रेजी कौशल उन्नयन पर संगोष्ठी आयोजित

लोहारू। चौ बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय में अग्रेसी कौशल उन्नयन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें जयपुर के वक्ता आयुष शर्मा ने मुख्यअतिथि के रूप में शिरकत की और विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा के श्रवण, कथन, पठन और लेखन संबंधी नवीन विधियों के बारे में अवगत कराया। कार्यकारी प्राचार्य डॉ सुखबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में कालेज छात्र छात्राओं ने बढ़ चढक़र हिस्सा लिया। डॉ सुखबीर ङ्क्षसह ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम युवाओं में अग्रेंजी विषय के प्रति रुझान बढ़ाते हैं और उनकी जिज्ञाशाओं को शांत करते हैं।

धूमधाम से मनेगा श्री श्याम जन्मोत्सव

भिवानी । छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी नगरी में धर्म और आस्था का एक और भव्य अध्याय जुडऩे जा रहा है। शहर के नया बाजार स्थित श्री श्याम प्राचीन मंदिर में 30 नवंबर रविवार को विशाल श्री श्याम जन्मोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस धार्मिक कार्यक्रम को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं और पूरा मंदिर परिसर बाबा श्याम के जयकारों से गूंजने को तैयार है।

प्रदेश से 260 महिला पुरुष खिलाड़ियों ने भाग लिया

भिवानी। मुए थाई खेल संघ हरियाणा द्वारा दो दिवसीय प्रदेश स्तरीय मुए थाई चैंपियनशिप का शुभारंभ आज शनिवार 29 नवंबर 2025 को श्री सनातन धर्म जगदीश कन्या सीनियर सेकंडरी स्कूल में किया गया। प्रदेश के 14 जिलों से 260 महिला पुरुष खिलाड़ियों ने भाग लिया। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सनातन धर्म जगदीश कन्या सीनियर सेकंडरी स्कूल के कार्यकारी प्रधान ओपी नंदवाणी, मुए थाई खेल संघ हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष राहुल राणा, प्रदेश महासचिव सोमबीर वशिष्ठ मौजूद रहे।

शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डा. पवन शर्मा व जसमीन लम्बोरियां ने करवाई प्रतियोगिता

मुस्कान ने 9.29 सकेंड में तीन सौ मीटर दौड़कर जीता गोल्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शनिवार को 69 वीं राष्ट्रीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता में धावकों ने जबरदस्त दमखम दिखाया। प्रतिभागियों ने एक दूसरे को हराकर गोल्ड कब्जाने का प्रयास किया। आयोजित प्रतियोगिता में हरियाणा की मुस्कान ने 9.29 सेकेंड में तीन सौ मीटर की दौड़ पूरी करके गोल्ड पर कब्जा जमाया। वहीं महाराष्ट्र की स्वानंदी संतोष ने एक मिनट एक सेंकेड में बाधा दौड़ पूरी करके सोना जीतकर उक्त स्पर्धा में पहले स्थान पर रही। प्रतियोगिता के बाकी मुकाबले रविवार को भी आयोजित होंगे।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. पवन शर्मा, अंतर्राष्ट्रीय महिला बॉक्सर जसमीन लम्बोरिया,जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. निर्मल दहिया, उप जिला शिक्षा अधिकारी शिव कुमार तंवर, नोडल अधिकारी सत्यवान कोच, डॉ. अनिल कुमार ने संयुक्त रूप से खिलाड़ियों का परिचय लेकर स्पर्धाएं ने संयुक्त रूप से खिलाड़ियों का परिचय लेकर खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

भिवानी। बाधा दौड़ पार करते प्रतिभागी।

विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

करवाया। अंडर 19 आयुवर्ग में लड़कियों की स्पर्धा में हरियाणा की मुस्कान ने 9.29 सेकेंड में पूरी करके पहले स्थान पर रही। इसी तरह राजस्थान मुक्ता ने 9.46 सकेंड में दूरी तय की दूसरे स्थान पर रहे। चार सौ मीटर में बाधा दौड़ में स्वानंदी संतोष ने एक मिनट 1 सेकेंड में पार करके सोना जीता। इसी स्पर्धा में झारखंड की सिवानी कुमारी ने यह बाधा दौड़ 1 मिनट 1.85 सेकेंड में पार करके दूसरे स्थान पर रही। 800 मीटर दौड़ स्पर्धा में कनार्टक की नागिनी ने 2 मिनट 12 सेंकेड में पूरी करके पहले, दिल्ली की रिया बिष्ट ने 2.13 सेकेंड में पूरी करके दूसरे स्थान पर रही। इसी तरह 58 किलो ग्राम भार वर्ग की पोल वाल्ट स्पर्धा में हरियाणा की ज्योति 3.10 मीटर ऊंची छलांग लगाकर पहले तथा तमिलनाडू की महालक्ष्मी आर ने 3 मीटर ऊंची छलांग लगाकर दूसरे स्थान पर रही। इस मौके पर प्राइवेट स्कूल वैलफेयर एसोसिएशन के प्रधान राम अवतार शर्मा, श्री भगवान एईओ, बीईओ सिवानी डॉ. सुरेंद्र सिंह,विजय प्रभा,विजय सांगवान,एसजीएफआई के फिल्ड अधिकारी सुशीला सिंह , कुलदीप महला व लक्ष्मण गौड़ आदि मौजूद रहे। दूसरी तरफ निर्णायक एवं आयोजन समिति श्री भगवान एईओ, प्रीतपाल टूर्नामेंट मैनेजर, राजेश्वर ढिल्लो, जीतपाल शर्मा, देवेंद्र अत्री, यशपाल चौपड़ा पंचकूला, तकनीकि विशेषज्ञ केशम बाला फरीदाबाद, संगीता रानी एईईओ करनाल,राकेश सिवाच एईओ रोहतक, कुलदीप अहलावत, राजेश प्रवक्ता, संजय कोच, रामचंद्र पुनिया, सुखदेव डीपी, रविंद्र डीपी, संजय यादव, सुनील कुमार, सुशील दहिया, राकेश भारद्वाज, प्रवीण भारद्वाज आदि मौजूद रहे।

400 मीटर में पंजाब के जसनप्रीत सिंह ने मारी बाजी

लड़कों के अंडर 19 आयुवर्ग में पंजाब के जसनप्रीत सिंह ने 400 मीटर बाधा दौड में पहले स्थान पर रहे। राजस्थान के राजबीर ने दूसरा स्थान हासिल किया। 800 मीटर की दौड स्पर्धा में सीआईएससीई के सिद्धार्थ ने 1.56 सेंकेड में दौड कर सोना जीत कर पहले स्थान पर रहा। राजस्थान के हैप्पी भागेसरा ने 1.56.52 सेकेंड में पूरा करके दूसरे स्थान पर रहे। तीन हजार मीटर दौड़ स्पर्धा में महाराष्ट्र के कर्ण रमेश ने 8 मिनट 24 सेकेंड में पूरी करके पहले,राजस्थान के ललित पुनिया ने 8.25 सेकेंड में पूरी करके दूसरे स्थान पर रहे।जेवलिंग थ्रो स्पर्धा में विद्या भारती से मोहम्हद शंहशाह 72.8 मीटर फेंक कर पहला, राजस्थान के रोहित 71.21 मीटर फेंक कर दूसरे स्थान पर रहे। खेलकूद प्रतियोगिता में मीडिया प्रभारी जयबीर नाफरिया व शारीरिक शिक्षक विनोद पींकू ने बताया कि प्रतियोगिता के बाकी मुकाबले रविवार को होंगे, जिनकी तैयारी चल रही।

विवेकानंद हाई स्कूल में हुआ आयोजन

118 विद्यार्थियों ने गीता श्लोक पाठ से दिया पर्यावरण का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में स्थानीय विवेकानंद हाई स्कूल में आयोजित विशेष कार्यक्रम में 118 प्रशिक्षित विद्यार्थियों ने अष्टादश गीता श्लोक का सामूहिक पाठ कर पर्यावरण व सड़क सुरक्षा का संदेश दिया। यह कार्यक्रम गीता मनीषी ज्ञानानंद महाराज एवं जिला शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में सामाजिक संस्था नेताजी सुभाष चंद्र बोस युवा जागृत सेवा समिति, सदाचारी शिक्षा समिति, श्री कृष्ण कृपा परिवार तथा जियो गीता के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। विद्यार्थियों द्वारा किए गए इस सामूहिक उच्चारण ने गीता जयंती के महत्व को उजागर करते हुए समाज में सकारात्मक संदेश प्रसारित किया।

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

कार्यक्रम के दौरान 11 दिवसीय गीता जयंती महोत्सव संयोजक, समिति की निदेशक सावित्री यादव तथा अष्टादश गीता श्लोक उच्चारण जन-जागरण अभियान के संयोजक अशोक भारद्वाज ने बताया कि 1 दिसंबर को विश्वभर में एक साथ गूंजने वाला गीता पाठ भारत की सांस्कृतिक धरोहर, परंपरा और धार्मिक संस्कारों का संदेश जन-जन तक पहुंचाएगा। उन्होंने कहा कि मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से यह पवित्र संदेश देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में प्रसारित हो रहा है। उन्होंने बताया कि भिवानी जिले में भी 1 दिसंबर को अनेक स्थानों पर गीता जयंती के उपलक्ष्य में सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शहर के मुख्य चौकों, मार्गों, स्कूलों और विभिन्न संस्थानों में एक साथ गीता पाठ कर लोगों को आध्यात्मिकता, संस्कारों तथा भारतीय संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

शिक्षकों का कौशल वृद्धि करते रहना चाहिएः साबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

यूजीसी,मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र ,भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां, सोनीपत एवं वैश्य महाविद्यालय,भिवानी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एनईपी जागरूकता एवं संवेदनशीलता विषय पर आयोजित दस दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आज समापन हुआ।कार्यशाला के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कालीकट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर साबू के थॉमस, समारोह अध्यक्ष वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के प्रधान एडवोकेट शिवरतन गुप्ता, विशिष्ट अतिथि एमएमटीटीसी की निदेशक डॉ. शेफाली नागपाल,वैश्य महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजय गोयल एवं समन्वयक प्रोफेसर विपिन गुप्ता मुख्य रूप से उपस्थित रहें। वैश्य महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजय गोयल ने कार्यशाला के समापन सत्र के शुभारंभ अवसर पर सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने स्वागतीय उद्बोधन में कहा कि शिक्षक तभी सफल हो सकते हैं जब वह गहन अध्ययन करें तथा तकनीक के साथ-साथ विद्यार्थियों के साथ भी अपना जुड़ाव बनाए रखें समापन सत्र के अध्यक्ष कालीकट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर साबू के थॉमस ने अपने उद्बोधन ने कहा कि समय के बदलाव के अनुसार शिक्षकों को भी अपने कौशल में वृद्धि करते रहना चाहिए ।तकनीक का भी प्रयोग करना चाहिए ।कोई भी व्यवस्था हो, शिक्षक की वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो सकती ।

प्रकल्प समिति ने लगाया स्वास्थ्य शिविर

भिवानी। पार्क में आयोजित चिकित्सा कैम्प में लोगों के स्वास्थ्य की जांच करते हुए।

,**भिवानी।** गीता जयंती के उपलक्ष्य में जीओ गीता चिकित्सा सेवा प्रकल्प समिति द्वारा आज चौथे दिन भिवानी के चौधरी बंसीलाल पार्क में निशुल्क चिकित्सा कैम्प का आयोजन किया गया। इस दौरान मरीजों को ना केवल निशुल्क परामर्श और जांच की गई । कैम्प में डॉक्टरो की टीम ने 100 मरीजों की निशुल्क शुगर, बीपी आदि बीमारियों की जांच की। मरीजों को अपने आसपास सफाई रखने के बारे में भी जानकारी दी गई। इस मौके पर डॉ विनोद अंचल, डॉ कृष्ण कुमार , डॉ नरेश कुमार , डॉ अक्षरा, डॉ स्नेह, डॉ राजेश शर्मा, डॉ रविन्द्र, सहित अनेक चिकित्सा प्रकोष्ठ के सदस्य उपस्थित थे। उन्होंने ये भी बताया कि इसी कड़ी में 30नवंबर मुख्य पार्क, विकास नगर, 1दिसंबर सरदाना पार्क, कृष्णा कॉलोनी, में चिकित्सा शिविर का आयोजन होगा। जाँच शिविर सुबह 7 बजे से 8 बजे तक होगा। डॉ विनोद अंचल ने बताया की 1 दिसंबर को सुबह 11बजे स्वामी ज्ञानानंद के आह्वान पर पर एक मिनट का सामूहिक गीता पाठ का आयोजन भी होगा।

मॉडल संस्कृति विद्यालय में खंड स्तरीय विधिक साक्षरता प्रतियोगित आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के वीर शहीद कपिल देव राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में खंड स्तरीय विधिक साक्षरता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम कार्यकारी खंड शिक्षा अधिकारी आनंद शर्मा, विधिक साक्षरता खंड समन्वयक आशा के निर्देशन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मंच संचालन प्रवक्ता राजेन्द्र कुमार व हरदीप कुमार किया। कार्यक्रम में खंड के अनेक विद्यालयों के

बवानीखेड़ा। : एकत्रित बच्चों को संबोधतक करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विद्यार्थियों ने भाग किया। कॉक्यूमेंट्री फिल्म में पुर के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय प्रथम, पीपीटी में बलियाली के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय प्रथम व राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय द्वितीय रहे, निबंध लेखन में किरावड़ के राकवमावि प्रथम, पुर के राकवमावि द्वितीय, लोहारी जाटू के राकवमावि तृतीय रहे, भाषण में लोहारी जाटू के राकवमावि प्रथम स्थान पर रहे।

शिकायत चेयरपर्सन प्रतिनिधि ने लोगों को समस्याओं के समाधान का भरोसा दिलाया

अधिकारियों को समस्याओं को निपटाने के निर्देश दिए

नगरपरिषद के खुले दरबार में गूंजी गली स्ट्रीट लाइट और पेयजल की समस्याएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शनिवार को वार्ड संख्या 18 व 19 के लोगों की समस्याओं को लेकर नगरपरिषद ने खुला दरबार लगाया। जिसमें बाहरी इलाकों में कच्ची गलियों, स्ट्रीट लाइट व पीने के पानी की समस्याएं छाई रही। नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने उक्त वार्ड के लोगों को समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर अधिकारियों को निपटाने के निर्देश दिए। चेयरपर्सन प्रतिनिधि ने लोगों को भरोसा दिलाया कि चार माह के भीतर अधिकांश समस्याओं का निपटारा करवा दिया जाएगा। उक्त इलाके की कोई भी गली

भिवानी। अधिकारियों को समस्याओं की निराकरण के निर्देश देते हुए।

कच्ची नहीं रहने दी जाएगी। अब तक इन दोनों वार्डो की करीब दो दर्जन से ज्यादा गलियों का निर्माण करवाया जा चुका है। बाकी गलियों को भी जल्द ही पक्का करवाया जाएग। आयोजित खुले दरबार में लोगों ने बताया कि अधिकांश गलियां कच्ची है। उन गलियों में स्ट्रीट लाइट न होने के कारण लोगों को अंधेरे में ही गंत्तव्य तक जाना पड़ रहा है। कई बार अंधेरे की वजह से दुर्घटनाएं घटने की आशंका बन जाती है। चूंकि अंधेरे में कच्ची गलियों में रास्ता नहीं दिखाई देता और घरों से निकलने वाले गंदे पानी से बनी किचड़ में गिर जाते है। इस पर नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि पहले कुछ गलियों को पक्का करवाया जा चुका है। बाकी गलियों को भी जल्द पक्का करवा दिया जाएगा। इनके अलावा सभी गलियों में स्ट्रीट लाइटें लगवाई जाएगी। ताकि लोगों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। इस दौरान लोगों ने स्वच्छ पेयजल व सीवर के गंदे पानी की निकासी की भी मांग की। जिस पर चेयरपर्सन प्रतिनिधि ने जल्द ही उनकी इन समस्याओं का निपटारा करवा दिया जाएगा।

क्या कहते है नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि

नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि लोगों की समस्याओं को निदान के लिए हर वार्ड में खुले दरबार लगाए जाएंगे। उसमें लोगों की समस्याएं सुनी जाएगी और उनका मौके पर निराकरण भी करवाया जाएगा। अभी तक जितने खुले दरबार लगे है। उनका अच्छा रिसपॉस मिला है। इसी क्रम में रविवार को वार्ड संख्या 1, दो व तीन के लोगों के लिए सेक्टर स्थित सामुदायिकी केंद्र में खुला दरबार लगाया जाएगा।उन्होंने लोगों को स्वच्छता को पंख लगाए जाने के लिए नगरपरिषद का सहयोग करने का आहवान किया। ताकि भिवानी शहर को एक साफ व सूथरा शहरों की श्रेणी में अव्वल लाया जा सके।

न्यूज डायरी

बवानीखेड़ा। खिलाड़ियों का परिचय लेकर खेलकूद प्रतियोगिता शुरू करवाते विधायक।

सब जूनियर खो-प्रतियोगिता का आयोजन

बवानीखेड़ा। खंड बवानी खेड़ा के अंतर्गत आने वाले गांव बोहल के राजकीय उच्च विद्यालय में सब-जूनियर खो-खो प्रतियोगिता शुरू हुई। राजकीय उच्च विद्यालय बोहल में दो दिवसीय राज्य स्तरीय सब जूनियर खो खो प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ बवानी खेड़ा के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि व हरियाणा स्पोर्ट्स खो खो एसोसिएशन के महासचिव महेंद्र कंबोज के द्वारा किया गया। हरियाणा स्पोर्ट्स खो खो एसोसिएशन भिवानी के जिला प्रधान राजेश ढांडा व बोहल सरपंच रविंद्र कुमार ने प्रतियोगिता में आए हुए सभी अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। हरियाणा स्पोर्ट्स खो खो एसोसिएशन, भिवानी के उप प्रधान राजेंद्र बल्हारा व कोषाध्यक्ष कृष्ण यादव ने बताया कि पूरे हरियाणा के सभी जिलों से लगभग 600 खिलाड़ियों ने इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया।

बाढड़ा। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

खंड स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में छात्रों ने दिखाया हुनर

बाढड़ा। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बाढड़ा में खंड स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें खंड के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना, नवीन सोच को प्रोत्साहित करना तथा विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ाना था। प्रदर्शनी के दौरान मॉडल मेकिंग, रोल प्ले और पोस्टर मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता और शोध कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी हरिकिशन राणा उपस्थित रहे। उन्होंने प्रदर्शनी में प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत मॉडलों की सराहना करते हुए विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

भिवानी। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

आध्यात्म से मिलती है आत्मिक शांतिः धर्मबीर

भिवानी। आज के युग में हम जीवन की भागदौड़ में इतने व्यस्त हो चुके हैं जिसके कारण हमारा मानसिक संतुलन अस्थीर होता जा रहा है। इससे हमारे अंदर हमेशा तनाव बना रहता है। इसको केवल आध्यात्म से ही दूर किया जा सकता है। यह सांसद धर्मबीर सिंह ने स्थानीय किरोड़ीमल पार्क में गीता जयंती महोत्सव के दौरान प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज की शाखा सिद्धि धाम द्वारा लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आध्यात्म से हमें आत्मीक व मानसिक शांति तो मिलती ही है इसके साथ-साथ जीवन जीने का मार्ग भी मिलता है। शाखा प्रबंधक राजयोगिनी बीके सुमित्रा व बीके आरती बहन ने सांसद धर्मबीर सिंह का स्वागत किया और चित्रों के माध्यम से आध्यात्म के बारे में जानकारी प्रदान की तथा गीताज्ञान के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर बीके राजेश, बीके भीम सिंह चौहान, बीके आशा, बीके पूनम, बीके मिनाक्षी, बीके नीलम, बीके कल्पना, बीके करूणा, बीके कविता, बीके संतोष, बीके सुशील, बीके सुषमा, बीके सुदेश, बीके मंजू, बीके महेश व मीडिया कॉर्डिनेटर बीके धर्मवीर आदि उपस्थित रहे।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में पीटीएम आज

भिवानी। आज विद्यालय में गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध विशेषज्ञ वक्ता एवं बाल मनोवैज्ञानिक डॉ. संजीव वशिष्ठ द्वारा कक्षा 10वीं एवं 12वीं के बोर्ड परीक्षार्थियों के लिए प्रेरक सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में विद्यार्थियों को स्ट्रेस मैनेजमेंट, बोर्ड परीक्षा की प्रभावी तैयारी, सकारात्मक सोच और एकाग्रता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया। शिक्षक -अभिभावक बैठक के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में माता-पिता की उपस्थिति ने सत्र को और भी सार्थक बनाया। डॉ. वशिष्ठ ने अभिभावकों को यह भी बताया कि बोर्ड परीक्षा के दौरान बच्चों को किस प्रकार सहयोग, प्रोत्साहन और सकारात्मक वातावरण प्रदान किया जा सकता है।

कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य, सभी शिक्षकगण,विद्यार्थी तथा बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित रहे। प्राचार्य महोदय ने डॉ. वशिष्ठ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे प्रेरक सत्र विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और बोर्ड परीक्षाओं के लिए उन्हें मानसिक रूप से तैयार करते हैं।

मूसनौता स्कूल के प्राचार्य अजय यादव सेवानिवृत्त

नांगल चौधरी। सीनियर सेकेंडरी स्कूल मूसनौता के प्राचार्य अजय यादव शिक्षा विभाग को 32 साल सेवाएं देकर सेवानिवृत्त हो गए। उनके उत्कृष्ट कार्यकाल पर स्टॉफ व विभिन्न गांवों के जनप्रतिनिधियों ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विदाई समारोह में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी तथा हवन में आहुति डालकर प्राचार्य के बेहतर स्वास्थ्य की मन्नतें मांगी। खंड शिक्षा अधिकारी सुनिता यादव ने बताया कि अजय यादव की 2017 में प्राचार्य पद पर पदोन्नति हुई थी। उन्होंने सर्वप्रथम भुंगारका सीनियर सेकेंडरी स्कूल में सेवाएं दी। इसके बाद पांच साल बूढ़वाल स्कूल में कार्यकाल रहा है। 2022 में मूसनोता स्कूल में कार्यभार संभाला था, करीब तीन साल के कार्यकाल में उन्होंने स्कूल के विकास में सकारात्मक सहयोग दिया है। परीक्षा परिणाम तथा अन्य गतिविधियों में स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस मौके पर जिला पार्षद श्याम चंदेला, शहबाजपुर स्कूल के प्राचार्य विकास जयदीप, कैलाश यादव, सोनिया लांबा, राजकुमार, जीतराम, ओमप्रकाश, हंसराज, मुनेश, एकता, संतोष, बलवान, नरेश कुमार, रतिराम सरपंच, महावीर चंदेला, बिक्रम सिंह आदि मौजूद रहे।

PUBLIC NOTICE

I, Sanjeev Kumar Chhakkar S/o Jai Parkash Chhakkar R/o Mohalla Chhakkar Market New Mandi Narnaul, Distt .Mahendergarh (Haryana) have changed my name from Sanjeev Kumar Chhakar to Sanjeev Kumar Chhakkar.

PUBLIC NOTICE

I Yogesh Kumar Sharma S/o Vijay Kumar Sharma R/o Village Khatoti khurd, P.O. Hamidpur, Narnaul, Distt. Mehendergarh (Haryana)Declare that Yogesh Kumar Sharma & Yogesh Kumar are same person as per documents.

खबर संक्षेप

चोरी के आरोप में पुलिस ने 4 युवकों को पकड़ा

कनीना। कनीना के बंद पड़े इंजीनियरिंग कॉलेज भवन में कंप्यूटर की एलसीडी, मॉनिटर व एल्युमीनियम का दरवाजा, खिड़की चोरी करने के आरोप में पुलिस ने चार युवकों को राउंडअप किया है। जिनकी पहचान मनो, साहिल, आतिश, मोहित वासी कनीना के रूप में हुई है। चोरों से सामान भी बरामद किया गया है।

हैप्पी स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। हैप्पी स्कूल एवरग्रीन स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कक्षा तीसरी से पांचवीं के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी रंग-बिरंगी और रचनात्मक वेशभूषा के माध्यम से समाज को कई प्रेरणादायक संदेश दिए। किसी ने सामाजिक जागरूकता का महत्व बताया, तो किसी ने तले-भुने पदार्थों के सेवन से बचने का संदेश दिया।

सैदपुर निवासी विजय सिंह का निधन

मंडी अटेली। अटेली बीडीपीओ कार्यालय से रिटायर्ड गांव सैदपुर निवासी विजय सिंह का 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। विजय सिंह ने पंचायत विभाग में 25 वर्षों से अधिक सेवा देकर ग्राम पंचायतों व सरपंचों को बड़ा सहयोग किया। उनके बेटे महेश सैन ने बताया कि उनकी बैठक गांव सैदपुर में हो रही है। वह अपने पीछे तीन लड़के, एक लड़की समेत भरापूरा परिवार छोड़ कर चले गए हैं।

आईटीआई मैदान में 1 दिसंबर तक दिखेगा कला एवं संस्कृति का रंग

मंत्रोच्चारण के बीच अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ

गीता के श्लोकोच्चारण से गीतामय हुआ वातावरण
गीता विषाद से विजय तक ले जाती है: एडीसी

नारनौल। गीता महोत्सव का शुभारंभ करते अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

एडीसी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का जो दिव्य संदेश दिया वह आज भी मानव के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ नारनौल

मंत्रोच्चारण व पवित्र ग्रंथ गीता के पूजन के बीच शनिवार को अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। इसके साथ ही चारों तरफ पवित्र ग्रंथ गीता के श्लोकोच्चारण से समस्त वातावरण गीतामय हो उठा। अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह ने मुख्य अतिथि के तौर पर गीता यज्ञ में पूर्ण आहुति डाली और कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर नगराधीश डॉ. मंगल सेन भी मौजूद थे। इस महोत्सव में विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों से आई लोक कलाकारों की टीमों ने हरियाणवी वेशभूषा में सुसज्जित होकर गीता थीम पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि से अंजू दीदी, हरियाणा केंद्रीय विवि के प्रोफेसर आनंद शर्मा व जीओ गीता से मास्टर सुरेश कुमार ने गीता पर अपने व्याख्यान दिए। नागरिकों को गीता पर्व की बधाई देते हुए एडीसी उदय सिंह ने कहा कि सरकार के प्रयासों से गीता जयंती को अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का दर्जा मिला है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का जो दिव्य संदेश दिया वह आज भी मानव के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। गीता विषाद से विजय तक ले जाती है। जीओ गीता परिवार के सदस्यों ने गीता स्थापना करवाई। आयुर्वेद अधिकारी डॉ. शशिबाला, बीजेपी जिला उपाध्यक्ष वासुदेव यादव, लोक संस्कृति प्रकोष्ठ से डॉ. कृष्णा यादव, माई भारत के जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव, माता सती वेलफेयर समिति नारनौल के अध्यक्ष सिकंदर गहली के अलावा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

वाद्य यंत्रों की धुन पर नाच उठे युवा

आईटीआई परिसर में चल रहे जिला स्तरीय गीता महोत्सव में आध्यात्मिक ज्ञान के साथ हरियाणा की लोक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। महोत्सव में प्रवेश करते ही आगंतुकों का स्वागत जिस पारंपरिक और मनमोहक तरीके से किया जा रहा है वह हर किसी को भाव विभोर कर रहा है। बीन, डेरु और डफ की पारंपरिक त्रिवेणी से निकलती मधुर धुनें पूरे वातावरण में एक उत्सव का संचार कर रही हैं। इन वाद्य यंत्रों पर बजने वाली सुंदर सुर लहरियों को सुनकर आगंतुक भी अपने आप को रोक नहीं पा रहे हैं और वे भी नाचने को मजबूर हो जाते हैं। आईटीआई में चल रहे तीन दिवसीय जिला स्तरीय गीता महोत्सव के दूसरे दिन 30 नवंबर रविवार को हवन यज्ञ के बाद प्रदर्शनी व सेमिनार 10:15 बजे व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 11:15 बजे किया जाएगा। इस कार्यक्रम में महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत करेंगे।

गीता थीम पर आधारित प्रस्तुति देकर शमां बांधा

आईटीआई में चल रहे गीता महोत्सव के दौरान विभिन्न स्कूलों की सांस्कृतिक टीमों ने गीता थीम पर आधारित प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को और उल्लासपूर्ण बना दिया। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नांगल चौधरी, एमआर मित्रपुरा, एमआर अटेली, एसडी ककराला, सीएल पब्लिक स्कूल व आरपीएस स्कूल के छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

प्रदर्शनी में निखर रहा हुनर व स्वावलंबन

आईटीआई में चल रहा जिला स्तरीय गीता महोत्सव हरियाणा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत हस्तकला का भव्य मंच बना हुआ है। यहां स्वयं सहायता समूहों की महिला उद्यमियों के स्वावलंबन की कहानी भी दिखाई दे रही हैं। यहां पारंपरिक हस्तकला व पाककला देखने को मिल रही है। इस वर्ष प्रदर्शनी में स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी विशेष रूप से प्रेरणादायक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत के सपने यहां साकार होते दिख रहे हैं। आईटीआई में चल रहे गीता महोत्सव के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र, जिला बागवानी विभाग, आयुष विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान नसीबपुर, स्वास्थ्य विभाग, जिला रेडक्रॉस समिति, नागरिक संसाधन सूचना विभाग, जिला अक्षय ऊर्जा विभाग के अलावा जीओ गीता, रिचा क्राफ्ट अटेली, जय श्रीश्याम स्वयं सहायता समूह अमरपुर जौरासी, एचडीएफसी बैंक परिवर्तन सहगल फाउंडेशन, चंदन श्रम भविष्य निधि योजना, जय श्री श्याम नांगल काठा स्वयं सहायता समूह, नारी शक्ति स्वयं सहायता समूह बचीनी, प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह बवानिया, बालाजी महिला स्वयं सहायता समूह बवानिया, खुशहाल महिला ग्राम संगठन कुंजपुरा, अम्मा पूजा स्वयं सहायता समूह कांटी, नया सवेरा महिला स्वयं सहायता समूह राता कलां, जय माता दी महिला स्वयं सहायता समूह कटकई व सार्थक महिला ब्लॉक संगठन सिहमा की ओर से स्टाल लगाई गई।

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेलकूद स्पर्धा शुरू

हरिभूमि न्यूज ▸▸ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। खेलकूद प्रतियोगिता में दमखम दिखाते खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

श्रीकृष्णा स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। मुख्यातिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव व विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव, डॉ. कविता राव उपस्थित रही, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश ने की। खेल प्रशिक्षक महीपाल यादव व उत्तम सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में वॉलीबाल, कबड्डी, एथलेक्टिस, योगा तथा फन खेल, शॉर्ट पुट, लौंग जंप, म्यूजिकल चेयर व रस्सा कस्सी खेलों का आयोजन किया गया। खेलकूद प्रतिस्पर्धा में मुख्यातिथि के आगमन पर चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, सीईओ कर्मवीर राव व डॉ. कविता राव का प्राचार्य द्वारा बुक्का भेंटकर स्वागत किया तथा अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण कर सलामी दी। कार्यक्रम में मंच संचालन संजीव कुमार ने किया।

लड़कों की दौड़ में 100 मी. में प्रिंस प्रथम, छविकांत ने दूसरा व यश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 200 मी. में नितेश प्रथम, कार्तिक ने दूसरा व कुशल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं लड़कियों की 100 मी. दौड़ में भावन प्रथम, माही ने दूसरा व वर्षा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं 200 मी. में अंशु ने प्रथम, रेणु ने द्वितीय व संगीता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं 400 मी. लडकों की दौड़ में हर्ष प्रथम, दीपांशु ने दूसरा व कृष, ओम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

राव जयराम स्कूल में हुई गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। अटेली रोड स्थित राव जयराम स्कूल में कक्षा छठी से 12वीं तक की एक गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय के गणित विभाग द्वारा किया गया। इस दौरान मंच संचालन अनीता यादव एवं नवीन यादव ने किया। निर्णायक मंडल की जिम्मेदारी शक्ति सिंह एवं विभांशु ने निभाई तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्राचार्य नरेंद्र कुमार उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में विद्यालय की अलग अलग हाउस से तीन टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में दस दस अंक के कुल पांच राउंड थे, जिसमें रविंद्रनाथ टैगोर हाउस से लोकश, ऋतिक, रितेश, साहिल एवं रिया ने 46 अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया, सुभाष चंद्र बोस हाउस से रिया, गौरव, सोनम, पार्थ एवं सुमित ने 43 अंक के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य नरेन्द्र यादव ने बताया कि इस प्रतियोगिता में सभी हाउस के बच्चो ने एक दूसरे को बहुत नजदीकी से मात दी। इस प्रकार की प्रतियोगि से बच्चो में सम्बंधित विषय के प्रति रूचि बढ़ती है तथा उस विषय का बारीकी से ज्ञान होता है। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है तथा आपसी प्रतिस्पर्धा से ही विद्यार्थी की पढ़ाई का आधार मजबूत होता है। प्राचार्या ने विजेताओं को पुरूस्कार देकर सम्मानित किया।

बीआर स्कूल के संस्थापक की 16वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▸▸ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। विद्यालय में हवन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

बीआर स्कूल सेहलंग के संस्थापक स्व. राजेंद्र भारद्वाज की 16वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में विद्यालय परिसर में हवन-यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम में पंडित सतनारायण जोशी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन संपन्न करवाया तथा संस्थापक की आत्मा की शांति के लिए आशीर्वचन दिए। इस दौरान स्व. भारद्वाज के बड़े भाई एवं पूर्व हेडमास्टर जगदीश प्रसाद, उनकी पत्नी सुशीला देवी, तथा उनके पुत्र हरीश भारद्वाज, कृष्ण भारद्वाज और पंकज भारद्वाज सहित समस्त बीआर स्टाफ उपस्थित रहा। सभी ने संस्थापक के चित्र पर पुष्पार्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके शिक्षा-सेवा के योगदान को याद किया। पंडित सत्यनारायण जोशी ने कहा कि स्व. राजेंद्र भारद्वाज ने शिक्षा को सेवा माना और समाज को ज्ञान का प्रकाश देने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने कहा कि संस्थापक राजेंद्र भारद्वाज ने जिस सपने के साथ बीआर शिक्षण समूह की नींव रखी थी।

सतनाली मंडी। विद्यार्थियों को साइबर क्राइम के बारे में जागरूक करते एएसआई इंद्रजीत सिंह। फोटो : हरिभूमि

साइबर क्राइम के बारे में किया जागरूक

सतनाली मंडी। राजकीय महाविद्यालय में साइबर क्राइम ब्रांच नारनौल व हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य जरनैल सिंह ने की। कार्यक्रम में एएसआई इंद्रजीत सिंह, साइबर क्राइम ब्रांच नारनौल ने विद्यार्थियों को मोबाइल द्वारा होने वाले अपराधों के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया। हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर विषय पर जानकारी दी गई। मुख्य वक्ता देवेन्द्र सिवाच, पंचकूला व परविन्द्र सिंह चरखी दादरी ने हरियाणा सहकारी विभाग की ओर से चलाए जा रहे स्वरोजगार के अभियान की जानकारी दी। प्राचार्य जरनैल सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसके रोकथाम के लिए प्रेरित करना था। इस मौके पर डॉ. रेखा शेखावत, डॉ. हरिओम, डॉ. विपिन, संजय कुमार, राकेश कुमार मौजूद रहे।

मौलिक अधिकारों की दी जानकारी

नारनौल। राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में एनसीसी की बटालियन के कैडेट्स ने जारूरकता सप्ताह अभियान में हिस्सा लिया। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य अनिता देवी ने बताया कि एनसीसी बटालियन के निर्देशानुसार विद्यालय में जागरूकता सप्ताह अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स विभिन्न गतिविधियों में भाग ले रहे है। इसी कड़ी में शनिवार को कैडेट्स को मौलिक अधिकारों के बारे में बताया गया। जिसमें आरटीआई, मानव मौलिक अधिकार, शिक्षा का अधिकार आदि की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि एनसीसी की ओर से इस प्रकार की गतिविधियों से कैडेट्स को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। इस मौके पर सीटीओ विक्रम सिंह उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के कार्यकाल को बताया ऐतिहासिक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ महेंद्रगढ़

युवा इंकलाब संगठन ने स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के उत्कृष्ट कार्यों, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार और जनहित में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए आभार प्रकट किया है। संगठन के अध्यक्ष कुलदीप सुरजनवास ने कहा कि मंत्री द्वारा स्वास्थ्य विभाग की कमान संभालने के बाद से प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार उल्लेखनीय सुधार दर्ज किए गए हैं। संगठन ने बताया कि पिछले एक वर्ष के कार्यकाल में मंत्री आरती सिंह राव ने कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को स्वीकृति दिलाई है, जिनका लाभ आने वाले वर्षों तक प्रदेश की जनता को मिलता रहेगा। महेंद्रगढ़ के अस्पताल को 50 से 100 बैड तक, नारनौल अस्पताल को 200 बैड तक और गुरुग्राम के अस्पताल को 600 बैड तक अपग्रेड करने के फैसले ने क्षेत्रीय स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत आधार प्रदान किया है। इसी प्रकार पटीकरा आयुर्वेदिक चिकित्सालय में 100 सीटों के बीएएमएस कोर्स तथा कोरियावास मेडिकल कॉलेज में 100 सीटों पर एमबीबीएस की स्वीकृति मिलना भविष्य की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है। युवा इंक़लाब संगठन ने मंत्री के औचक निरीक्षणों की भी सराहना की। संगठन के अनुसार मंत्री द्वारा समय-समय पर अस्पतालों का निरीक्षण कर व्यवस्था सुधारने और मरीजों से संवाद स्थापित करने के प्रयासों से स्वास्थ्य सेवाओं में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं। कोरियावास मेडिकल कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम के नाम पर करवाने के फैसले को संगठन ने मास्टरस्ट्रोक बताते हुए कहा कि इससे शहीदों का सम्मान बढ़ा है और समाज में लंबे समय से चल रहे मतभेद भी खत्म हुए हैं।

नारनौल। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

सूरज स्कूल में हुआ वार्षिक उत्सव अभिनंदन

नारनौल। सूरज स्कूल में शनिवार को वार्षिक उत्सव अभिनंदन का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा पहली व दूसरी के नन्हे विद्यार्थियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से सभी का हृदय जीत लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय निदेशिका गायत्री यादव, उप निदेशक आदित्य प्रसाद एवं प्राचार्या द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर की। कार्यक्रम में सबसे पहले स्वागत गीत पर प्रस्तुति दी गई, जिसके बाद रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की शानदार श्रृंखला शुरू हुई। जिसमें रंगारंग नृत्य, देशभक्ति गीत, नाटक, पारंपरिक प्रस्तुतियां और उद्देश्य आधारित प्रदर्शनों ने मंच को जीवंत कर दिया। बच्चों की आत्मविश्वास से भरी प्रस्तुति कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही।कार्यक्रम में बच्चों ने कठपुतली नृत्य, नुक्कड़ नाटक तथा राजस्थान की लोक-संस्कृति की मनमोहक झलक भी प्रस्तुत की। प्रधानाचार्या रितु चहल ने बच्चों और शिक्षकों की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और कला कौशल को निखारते हैं।

पायगा गांव में हुआ जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम

जनस्वास्थ्य विभाग गांव की पेयजल समस्या का जल्द करें समाधान

एडीसी ने ग्रामीणों से किया सीधा संवाद और मौके पर हुई 26 समस्याओं की सुनवाई

हरिभूमि न्यूज ▸▸ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। ग्रामीणों की समस्या सुनते एडीसी व एसपी। फोटो : हरिभूमि

जन स्वास्थ्य विभाग पायगा गांव की पेयजल से संबंधित समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करें। यह बात अतिरिक्त उपायुक्त उदय सिंह ने गांव में आयोजित समाधान शिविर व रात्रि ठहराव कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याएं सुनते समय कही। अतिरिक्त उपायुक्त ने कहा कि हरियाणा सरकार की सुशासन की अवधारणा को धरातल पर उतारने की दिशा में जिला प्रशासन की ओर से रात्रि ठहराव कार्यक्रम का प्रत्येक माह आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में गांव पायगा में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अतिरिक्त उपायुक्त उदयभान सिंह, पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ व एसडीएम कनिका गोयल ने न केवल ग्रामीणों की समस्याएं सुनी, बल्कि गांव के विकास से जुड़े ग्रामीणों के सुझावों को भी सुना। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एडीसी उदय सिंह ने कहा कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सरकार का यह संकल्प है कि प्रशासन जनता के द्वार तक पहुंचे और उसकी समस्याओं को समझे। उन्होंने कहा कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जिनका स्थानीय स्तर पर समाधान संभव होता है, ऐसे में ग्रामीण एकजुटता के साथ ग्रामीण विकास में सहभागी बनें। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि जिन शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

कार्यक्रम में पायगा गांव के अलावा आसपास के गांवों से आए ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं जैसे सड़क, जल निकासी, बिजली, गलियों का निर्माण इत्यादि समस्याओं पर खुलकर चर्चा की। एडीसी ने मौके पर सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश देकर कई समस्याओं का तुरंत समाधान कराया। इससे ग्रामीणों में प्रशासन के प्रति विश्वास और गहरा हुआ। कार्यक्रम में 26 ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं रखी। रात्रि ठहराव में गांव पायगा निवासी देवव्रत शर्मा के जिला समाज कल्याण विभाग ने मौके पर ही बुढ़ापा पेंशन बनाई।

स्टॉल पर योजनाओं की मिली जानकारी

रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जागरूकता स्टॉल लगाए गए, जिनमें स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, शिक्षा, पशुपालन व बिजली विभाग प्रमुख रहे। एडीसी ने सभी विभागों की सरकार की जनहितकारी नीतियों को दर्शाती प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए आमजन को योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर नगराधीश मंगलसेन, डीएसपी सुरेश कुमार, तहसीलदार अजय कुमार, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी मनोज कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त, खण्ड शिक्षा अधिकारी अलका सहित गांव की सरपंच सुनीता देवी तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

हरियाणा टेलेंट सर्च प्रतियोगिता स्टेज-2 परीक्षा सम्पन्न

नारनौल। एनआईआईटी सेंटर पर शनिवार को हरियाणा टेलेंट सर्च प्रतियोगिता स्टेज-2 की परीक्षा की परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह परीक्षा एचकेसीएल हरियाणा नोलेज कारपोरेशन लि. पंचकूला के निर्देशानुसार आयोजित की गई। स्टेज-2 में वही प्रतिभागी शामिल हुए, जिन्होंने स्टेज-1 को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया था। सेंटर डायरेक्टर नवीन शर्मा ने बताया कि स्टेज-1 परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों व स्कूलों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। शहर के एबीएम, सैनी स्कूल, हरियाणा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल सहित अनेक विद्यालयों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि स्टेज-2 के बाद स्टेट लेवल और डिस्ट्रिक्ट लेवल पर टॉप करने वाले विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा, जिन्हें एचकेसीएल ओर से कैश प्राइज व मेडल प्रदान किए जाएंगे। सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट भी दिया जाएगा।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 30 नवंबर 2025

सुदृढ़ संचार व्यवस्था हो या सामरिक सुरक्षा का मामला, कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी की बात हो या प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना हो, इन सबके लिए स्पेस टेक्नोलॉजी में नित नई ऊंचाई छूना जरूरी है। इस दिशा में इसरो निरंतर अग्रसर है। यही नहीं विश्व की स्पेस सुपर पावर बनने के लिए भी इसरो के पास कई इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट्स और प्लानिंग्स हैं। इन सभी पर एक विस्तृत नजर।

अंतरिक्ष में नई ऊंचाई छूने के लिए निरंतर अग्रसर इसरो

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

इसरो द्वारा तीन साल के भीतर अंतरिक्षयान निर्माण की तीन गुनी क्षमता का लक्ष्य निर्धारण, भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा का पूर्वाभास है। यदि यह हासिल हो जाता है, तो भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भी न सिर्फ नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के समानांतर खड़ी होगी बल्कि विश्व अंतरिक्ष बाजार में भी वह बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाएगी।

देश की प्रगति के लिए जरूरी: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अगले तीन वर्षों में अपने अंतरिक्षयान निर्माण क्षमता को तिगुना करने का फैसला, देश की बदलती सामरिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्राथमिकताओं के पूर्वाभास सरीखा है। इसरो चाहता है कि खुद को अंतरिक्ष के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके, ताकि वो निजी कंपनियों की तेज भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के बीच अविलंब आगे आ सके। उसकी यह पहल, देश को विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष शक्तियों की श्रेणी में ऊपरी स्थान दिलाने की दिशा में एक रणनीतिक विस्तार है। अंतरिक्ष यान निर्माण क्षमता को बढ़ाना कई वजहों से जरूरी है। 5जी से बढ़कर 6जी की ओर बढ़ना है, तो सैकड़ों छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना ही होगा। पृथ्वी अवलोकन और जलवायु निगरानी उपग्रहों की मांग भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ेगी।

वैश्विक शक्ति बनने की है सामर्थ्य: वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उपग्रहों और उनकी सेवाओं की मांग अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है। संचार, अर्थ ऑब्जर्वेशन, रक्षा, निगरानी, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, कृषि और ऊर्जा क्षेत्रों में उपग्रहों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने के चलते आने वाले दशक में हजारों नए उपग्रह लॉन्च होने की उम्मीद है।

भारत के पास सस्ता, तेज, कुशल और विश्वसनीय अंतरिक्ष अभियान संचालन की बेहतर क्षमता है, इसको पूरी दुनिया जान और मान रही है। तमाम देश इसके लिए भारत की ओर आकर्षित भी हैं। लेकिन अंतरिक्ष यान निर्माण-क्षमता के सीमित होने के कारण देश बेहतरीन कौशल होने के बावजूद इस तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहा। इसरो अभी सालाना औसतन 6 से 7 अंतरिक्षयान बनाता है। तीन साल बाद क्षमता तीन गुना होने का मतलब है कि वह 18 से 21 अंतरिक्षयान प्रति वर्ष तैयार कर सकेगा। फिर उसके पास अन्य देशों के उपग्रहों के लांच के लिए न सिर्फ पर्याप्त यान होंगे बल्कि उन्हें लांच के लिए विंडो भी। कम समय अंतराल पर होने और निर्माण तथा लांच सुविधाएं सीमितता के चलते इसरो के कई प्रक्षेपण कार्यक्रम आपस में ओवरलैप करते हैं। इसरो द्वारा उत्पादन वृद्धि के साथ सैटेलाइट इंटीग्रेशन सेंटर्स की संख्या बढ़ाना इस ओवरलैप को कम करेगा। अंतरिक्षयानों की संख्या में वृद्धि भारत को वैश्विक प्रक्षेपण सेवाओं के बड़े बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धी बनाएगा, जहां आज अमेरिका की स्पेस-एक्स जैसी निजी कंपनियां लगभग एकछत्र राज कर रही हैं।

संभावनाएं-क्षमताएं हैं भरपूर: आज भारत, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में केवल 2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसरो इसे 2030 तक 8 फीसद तक ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। क्षमता विस्तार, निजी साझेदारी और नई तकनीकों का विकास इसे संभव बना सकता है। बेशक इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी दर्ज होगी तथा संबंधित क्षेत्र में साख भी बढ़ेगी। असल में इसरो की रणनीति महज अपने अंतरिक्ष यानों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। इस दौर में जब देश में कई स्पेस स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं, इसरो की प्लानिंग है कि अंतरिक्षयान निर्माण में तमाम बड़ी निजी कंपनियों जैसे लार्सन एंड टुब्रो, गोदरेज, एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, स्काईरूट, अग्निकुल, ध्रुव स्पेस तथा अन्य छोटे

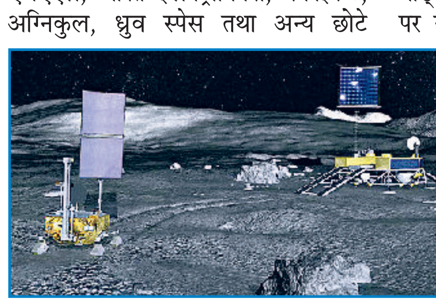

स्टार्टअप्स को भी वह इस काम में बड़े पैमाने पर साझेदार बनाए ताकि इससे भारत में 'एयरोस्पेस मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री' का विकास तीव्र हो। यह अमेरिका में नासा और स्पेस-एक्स जैसे सरकारी एजेंसी और निजी कंपनी के आपसी सहयोग जैसे मॉडल को भारतीय परिस्थितियों में संभव बनाना चाहता है। इससे देश, संबंधित कंपनियों और आखिरकार इसरो को लाभ पहुंचेगा।

निजी क्षेत्रों को कर रहा प्रोत्साहित: जल्द ही भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी उद्योग-निर्मित पीएसएलवी इसी परिवर्तन की ज्वलंत निशानी बनेगा। इसरो खूब जानता है कि निजी क्षेत्र जितना बड़ा होगा, उसको उतनी ही सुविधा होगी। वह उन पर बहुत से तकनीकी और निर्माण कार्यों की जिम्मेदारी देकर अपना ध्यान ज्यादा से ज्यादा प्रक्षेपण कार्यक्रमों एवं अनुसंधान मिशनों पर केंद्रित कर पाएगा। इसरो को निजी-सरकारी कंपनियों के सहयोग से तीन गुनी यान निर्माण क्षमता हासिल हो गई, तो उसका परोक्ष प्रभाव यह भी होगा कि इसरो के वैज्ञानिक मिशन तेजी से पूरे होंगे, वाणिज्यिक लॉन्च बढ़ेंगे। ऐसे में भारत वैश्विक उपग्रह-निर्माण और प्रक्षेपण बाजार में बेहद कमाऊ और प्रभावी खिलाड़ी बन सकेगा। इनके अलावा इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और ज्यादा बढ़ेगी, तो विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होती जाएगी। बड़ी बात यह भी कि पांच मॉड्यूल वाला देश का अंतरिक्ष स्टेशन समय पर स्थापित करने की संभावना भी इससे मजबूत होगी।

कई स्तरों पर करनी होगी पहल: इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस सैंपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ की मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए, ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रैकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

कई प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

इसरो के लिए आने वाला दशक निर्णायक है। इस वर्ष और अगले वर्ष में इसरो के पास आधे दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम शेष हैं और अगले कुछ वर्षों में संचालित होने वाले इसरो के पूर्व नियत कई प्रमुख अभियान तो बहुत जटिल और महत्वाकांक्षी हैं। गगनयान के कई मानव-रहित परीक्षण, मानव सहित गगनयान, 2028 में जाने वाला चंद्रयान-4, जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिशन लूपेक्स, एसएसएलवी निर्माण तथा रि-यूजेबल लॉन्च व्हीकल का विकास, शुक्रयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, नई पीढ़ी के संचार उपग्रह जैसे कई महत्त्वाकांक्षी मिशन पर कार्य जारी है।

डिजिटल गेम्स वर्तमान है शानदार-उज्ज्वल है भविष्य

हाल के वर्षों में मनोरंजन के लिहाज से डिजिटल गेम्स का क्रेज जबर्दस्त तरीके से बढ़ा है, निरंतर इसमें इजाफा भी हो रहा है। खासतौर पर इसे लेकर नई पीढ़ी में बहुत दीवानगी देखी जाती है। इसकी क्या हैं वजहें और कैसा है भविष्य, जानिए।

टेक्नोलाइफ
लोकमित्र गौतम

आज के युग में मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी प्रयोग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके हैं-डिजिटल गेम्स। मोबाइल, कंप्यूटर, टैबलेट और गेमिंग कंसोल के जरिए खेले जाने वाले ये खेल महज खेल नहीं हैं बल्कि आज की तारीख में अरबों रुपए का कारोबार भी है। नई पीढ़ी के बीच इन डिजिटल गेम्स का आकर्षण इतना अधिक है कि अब ये डिजिटल गेम्स एक पूरी संस्कृति का रूप ले चुके हैं।

क्या होते हैं डिजिटल गेम्स: डिजिटल गेम्स सही मायने में इलेक्ट्रॉनिक खेल होते हैं। इन्हें डिजिटल गेम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये किसी डिजिटल डिवाइस के जरिए खेले जाते हैं। जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टैबलेट या वीडियो गेम कंसोल। डिजिटल गेम्स में ग्राफिक, ध्वनि और उपयोगकर्ता का सीधे-सीधे संपर्क या इंट्रैक्शन संभव है। यह इंट्रैक्शन या संपर्क दो तरीके से होता है। इसमें एक है वर्चुअल अनुभव। वास्तव में यह किसी अनुभव के आधार पर तैयार किए जाते हैं और यहीं इनकी भूमिका बदल जाती है। यह केवल शारीरिक सक्रियता या महज मनोरंजन का कारण नहीं होते बल्कि कभी-कभी सीखने, कभी रणनीति बनाने, कभी निर्णय क्षमता को परखने या उसे विकसित करने तथा कभी-कभी हीनभावना को दूर करने का तरीका भी होते हैं।

दीवानी है नई पीढ़ी: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स को लेकर बहुत ज्यादा आकर्षण या कहें क्रेज है। विशेषकर जनरेशन जेड और अल्फा, डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली-बढ़ी पीढ़ियां इन खेलों की दीवानी हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इनका बचपन मोबाइल और इंटरनेट के साथ खेलते और इस्तेमाल करते हुए गुजरा। इसलिए डिजिटल गेम्स को ये मनोरंजन नहीं कहते बल्कि अपने व्यक्तित्व की पहचान, प्रतिस्पर्धा और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं।

इसलिए बढ़ रहा इतना क्रेज: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स का इतना क्रेज इसलिए है, क्योंकि यह वास्तविक अनुभव देता है। आज के डिजिटल गेम्स में एक साथ वीआर यानी वर्चुअल रियलिटी और एआर यानी ऑग्मेंटेड रियलिटी का इस्तेमाल होता है, जिसे खिलाड़ी इन्हें दूर से खेलता हुआ नहीं लगता बल्कि खुद को वह खेल के भीतर का हिस्सा समझता है और खेल के रोमांच को पल-पल महसूस करता है। दुनिया के किसी कोने से किसी दोस्त के साथ, किसी अजनबी के साथ, इन खेलों को खेला जा सकता है यानी आज की डिजिटल लाइफ के अनुकूल ये ऑनलाइन गेम की सुविधा प्रदान करते हैं और सबसे आकर्षक बात यह है कि डिजिटल गेम्स, एक रिवॉर्ड सिस्टम से भी जुड़ा होता है यानी प्वाइंट, लेवल और खरीदारी के लिए वाउचर जैसी सुविधाओं का मौजूद होना खिलाड़ियों को अलग ही दुनिया के रोमांच से जोड़ देते हैं। आज की तारीख में डिजिटल गेम्स महज खेलने की डिजिटल गतिविधि भर नहीं हैं बल्कि यह एक किस्म की सामाजिक प्रतिष्ठा बन चुके हैं। युवाओं में गेमिंग अब अपने आपमें एक स्टेटस सिंबल बन चुका है। लोकप्रिय गेम्स में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स और फैंस भी मिलते हैं। इस तरह डिजिटल गेम्स मनोरंजन करने के साथ-साथ हमारे तनाव मुक्ति का भी जरिया हैं। इस कारण भी युवाओं में डिजिटल गेम्स को लेकर जबरदस्त क्रेज है।

ऐसे हुई डिजिटल गेम्स की शुरुआत: वर्ष 1962 की बात है, एमआईटी यानी मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका में दो युवाओं ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम स्पेस वार बनाया। स्टीव रसेल और उनके दोस्त मार्टिन ग्रेट्ज ने पहले-पहल इस डिजिटल गेम्स की अवधारणा को 1961 में रखा था। लेकिन बाद के एक साल में उनके साथ उनके चार और दोस्त आ जुड़े, ये थे- वेन विटानन, पीटर सैमसन, डेन एडवर्ड्स और एलन कोटाक। इन सभी ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम्स स्पेस वार सीडीपी-1 कंप्यूटर पर बनाया। यहीं से आधुनिक वीडियो गेम उद्योग की शुरूआत हुई।

जहां तक भारत में डिजिटल गेमिंग की शुरुआत का सवाल है तो यह सन 1990 के दशक में आया, जब कंप्यूटर और इंटरनेट भी धीरे-धीरे आम लोगों तक पहुंचने लगे थे। भारत का पहला स्वदेशी डिजिटल गेम 'भारतः द गेम' (1998) माना जाता है, जिसे सिनका गेम्स कंपनी ने विकसित किया था। हालांकि गेम बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ।

डिजिटल गेम्स का भविष्य: जहां तक डिजिटल गेम्स की दुनिया के भविष्य का सवाल है तो यह बेहद उज्ज्वल और तकनीकी रूप से बेहद रोमांचक है। साल 2025 में वैश्विक गेमिंग इंडस्ट्री बढ़कर 250 अरब अमेरिकी डॉलर की हो चुकी है और इसमें बहुत बड़ा हिस्सा भारत के डिजिटल गेम्स प्रेमियों का भी है। क्योंकि साल 2024 के अंत तक भारत में सक्रिय गेम्स की संख्या बढ़कर 40 करोड़ हो चुकी है। शायद यह डिजिटल गेमिंग का ही विस्तार है कि आज ई-स्पोर्ट्स की दुनिया बड़े पैमाने पर उभरी है और लाखों लोग इसे अपना करियर बनाकर अपना भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित कर रहे हैं। *

कविता
पुरुषोत्तम व्यास

गिरना भी अच्छा होता

कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता,
गिरने से संभलना सीखते
फिर चलना सीखते।
समझ में आता है
अति हर चीज की
अच्छी होती नहीं,
बात-बात पर अहंकारी,
और ज्यादा ज्ञानी
समझने से बच जाते।
बात यह भी जरूरी है कि
गिरने को किस रूप में देखते हो,
विचलित होते हो या
नए साहस से आगे बढ़ते हो
गिरने से दिमाग भी
ठिकाने रहता
अपने और पराए पर
पर्दा उठ जाता।
अगर गिरे तो फिर
नए रूप लेकर उठो
नए विचार लेकर उठो
बेफिक्र होकर जीना सीखो
इसलिए कभी-कभी
गिरना भी अच्छा होता है।

व्यंग्यात्मक संस्मरण
डॉ. मुकेश असीमित

टिकट विंडो की लाइन

रेलवे स्टेशन की टिकट विंडो आजकल किसी आध्यात्मिक तप जैसी लगती है। अमृत योजना का थोड़ा-बहुत बजट खर्च कर चार खिड़कियां बना दी गई हैं, पर चारों के सामने उतनी ही लंबी लाइनें, मानो चार अलग-अलग धर्मपंथ हों और भक्त सभी जगह समान संख्या में हों।

मैं बड़ी होशियारी से सबसे छोटी लाइन में लगा, और जैसे ही लगा किस्मत मेरी गर्दन पकड़कर मुझ पर हंस रही हो जैसे। मेरी लाइन कछुए की चाल से और बाजू वाली लाइन खरगोश की गति से फुर्र-फुर्र बढ़ती जा रही थी।

खिड़की पर एक बुजुर्ग बाबू थे, शायद रिटायरमेंट के ठीक पहले के अंतिम वर्ष में। चश्मा उतारते, लगाते, की-बोर्ड को किसी वेद-पाठ की तरह एक-एक अक्षर छूते। स्क्रीन पर अक्षर प्रकट होता तो उनके चेहरे की झुर्रियां भी खिल उठतीं, मानो तकनीकी उन्नयन का चमत्कार उन्हें रोज नई जवानी दे रहा हो। रेलवे ने शायद फैसला कर रखा है कि यह महाशय अपना अंतिम प्रण और अंतिम प्रणय दोनों इसी खिड़की पर छोड़ेंगे।

इतने में एक दुबला-पतला अधेड़ मेरी कोहनी पसलियों में गड़ाता हुआ फुसफुसाया, 'कौनसी ट्रेन चाहिए साहब? बोलो तो जुगाड़ कर दूं, अंदर तक पहुंच है। बस सौ का एक नोट एक्स्ट्रा।'

मैंने विनम्रता से मना कर दिया। विनम्रता पर उसने जर्दे-भीगे होंठों से मोबाइल और मुझे संयुक्त रूप से एक गाली दी और फुर्र हो गया। उसकी प्रतिक्रिया खीझ से उत्पन्न हुई, जैसे कोई एक डील होते-होते रह गई हो।

मोबाइल ही आजकल इन लंबी लाइनों का आधुनिक तपो-साधन है, सभी यात्री उसमें गुम। मैं भी व्हाट्सएप की दुनिया में तल्लीन था, तभी आगे शोर हुआ। एक यात्री जिसकी ट्रेन छूटने वाली थी, लाइन तोड़कर हथेली खिड़की के नैनो साइज के छेद में घुसा चुका था कि दूसरा यात्री अपना हाथ निकाल ही नहीं पा रहा था। अब विवाद यह नहीं कि किसकी बारी, बल्कि यह कि सबसे पहले हाथ कौन निकाले!

बाबू ने सीटी बजाई। दो पुलिसकर्मी अपनी तोंदें, बाल्टी की तरह लटकाते हुए आए। लाठी को हवा में घुमाते हुए स्थानीय भाषा में अपशब्दों का ऐसा समन्वित गान किया कि लाइन तुरंत सीधी हो गई। दोनों यात्रियों के हाथ बड़ी मुश्किल से निकाले गए। इस खींचतान में एक की हस्त-धारित भारतीय मुद्रा फट गई और उसके मुंह से निकली गालियां व्यवस्था की संपूर्ण संस्थाओं को समर्पित थीं, रेलवे, सरकार, मंत्री से लेकर कुली तक कोई नहीं छूटा।

मैं फिर मोबाइल में चला गया। नया वर्ष आने में महीना है लेकिन कंपनियां जैसे चाहती हैं कि इस बार मैं चार नए कपड़ों, दो नई चॉकलेटों और पांच नए कूपनों से लैस रहूं। ऑफर ऐसे कि लगता है हर कंपनी ने मेरे लिए ही सुकुमारी ब्रांड की मॉडल को विज्ञापन में खड़ा किया है। एक बार जल्दबाजी में मैंने सुकुमारी के मोहपाश में बंधे सब्सक्रिप्शन डाल दिया था, तभी से वह मेरे जीवन की स्थाई सदस्य बन चुकी है।

मोबाइल भी क्या करे। कंपनियां चाहती हैं कि आप दिन-रात उसी से चिपके रहो। कभी धमाका सेल, कभी फ्लैश सेल, कभी लास्ट स्टॉक, हड़प लो!

नई पीढ़ी को ये सेल-ऑफर ऐसे जकड़ती है कि किसी उल्टे-सीधे काम में ऊर्जा लगे, उससे अच्छा है कि स्क्रीन पर अंगूठा फिसलाते रहो। गेम्स, जुआ, सट्टा, लॉटरी सब आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है।

इधर मेरा मोबाइल भी मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है?

कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है।

सच कहूं तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता।

मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियां भी तड़ातड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूं, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई।

शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज भी। *

लघुकथा / सतीश उपाध्याय

दरवाजा

मम्मी, दादाजी की वजह से हमारी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है, बार-बार हमारे कमरे में आ जाते हैं।' परेश ने अपनी मां से दादाजी की शिकायत की। सामने कुर्सी पर बैठे दादाजी अखबार पढ़ रहे थे, वह तुरंत बोले, 'नहीं बेटा, ऐसी बात नहीं है। तुमको मैंने तीन घंटे से नहीं देखा था, इसलिए ऐसे ही तुम्हें देखने तुम्हारे कमरे में चला आया था।' परेश की मम्मी बेटे का पक्ष लेते हुए बोलीं, 'बाबूजी, थोड़ा बुद्धि से काम लिया करिए। स्कूल से कितना होमवर्क मिलता है, असाइनमेंट पूरा करना होता है। अगर वह आपसे बात करेगा तो उसका होमवर्क कैसे पूरा हो पाएगा?' दादाजी आहिस्ता से बोले, 'बेटा बात सही है, अब मैं आगे से ध्यान रखूंगा।' अगला दिन छुट्टी का था। परेश सारा दिन अपने लैपटॉप और मोबाइल में ही बिजी था। दादाजी के भीतर अपने पोते के प्रति प्यार उमड़ा तो वह अपने आपको रोक नहीं पाए। परेश के कमरे में चले गए। परेश के बेड पर स्कूल की कॉपी-किताबें बिखरी हुई थीं। वह मोबाइल में बिजी था। उसने दादाजी की आहट सुनी, लेकिन वह दादाजी की उपेक्षा करते हुए अपने मोबाइल में ही लगा रहा। दादाजी ने पूछा, 'क्या कर रहे हो बेटा?' परेश रूखे स्वर में बोला, 'दादाजी देख नहीं रहे हैं, मैं अपना असाइनमेंट पूरा कर रहा हूं। आप डिस्टर्ब मत करिए।' 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूं, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखा। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

पुस्तक: छवि से अलग (संस्मरण), **लेखक:** विनोद दास, **मूल्य:** 295 रुपए, **प्रकाशक:** सेतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

छवि से अलग

हाल में ही वरिष्ठ साहित्यकार विनोद दास के संस्मरणों की पुस्तक 'छवि से अलग' छपकर आई है। इसमें चौदह नामचीन साहित्यकारों के साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़ा संस्मरण भी संकलित है। इन संस्मरणों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सम्मिलित हस्तियों की कई अनावृत्त रही छवियां उजागर होती हैं। ये छवियां उनके साहित्यिक ही नहीं व्यक्तिगत जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। लेखक ने निरपेक्ष भाव से इनकी खूबियों और खामियों को सामने रखा है। इसके साथ ही साथ कई संस्मरणों में लेखक, समानांतर रूप से उस देश, काल और परिस्थितियों का भी वर्णन करते चलते हैं, जब इन अनुभूतियों को वे अर्जित कर रहे थे। निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ला, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, अखिलेश, शानी और मुद्राराक्षस जैसे कई साहित्यकारों के बारे में यह किताब बहुत कुछ अनसुना बताती है। *

अगर आपको गांव की खूबसूरती, वहां का प्राकृतिक वातावरण लुभाता है, साथ ही पक्षी प्रेमी भी हैं तो आपको इस मौसम में 'भारत का पक्षी गांव' के नाम से प्रसिद्ध मेनार गांव जरूर जाना चाहिए। किस तरह से मेनार गांव, पक्षी-प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन गया है, वहां से लौटकर बता रहे हैं लेखक अपनी जुबानी।

पक्षी संरक्षण की मिसाल मेनार गांव

पर्यटन स्थल
समीर चौधरी

हाल ही में मैं उदयपुर घूमने गया था। जब मुझे स्थानीय लोगों से पक्षी संरक्षण के लिए मशहूर मेनार गांव के बारे में पता चला तो खुद को रोक नहीं पाया। राजस्थान के खूबसूरत शहर उदयपुर के नजदीक स्थित मेनार गांव में मैं बिना किसी असुविधा के बिल्कुल सुबह पहुंच गया था। सुबह होते ही मेनार में चिड़ियों का चहचहाना हर ओर से सुनाई पड़ने लगता है। खासतौर पर मानसून के बाद सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह नजारा बहुत मनभावन लगता है, जब दूर देशों से बड़ी संख्या में पक्षी जाड़ों के अपने इस आवास में लौटने लगते हैं। दशकों से मेनार 100 से अधिक स्थानीय और ठंडे इलाकों से पलायन करके आने वाले पक्षियों का अभयारण्य बना हुआ है। यहां आने वाले प्रमुख पक्षियों में फ्लेमिंगो,

पेलिकन, कूटस और लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका सारस क्रेन भी शामिल हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पक्षी प्रेमी यहां आते हैं।

ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण: मेनार गांव की विशेषता केवल इसकी जैव-विविधता ही नहीं है बल्कि यहां के लोग भी हैं, जिनकी वजह से पक्षी संरक्षण संभव हो सका है। मेनार के लोगों का यहां आने वाले मेहमान पक्षियों से लगाव का सिलसिला लगभग दो शताब्दी पहले आरंभ हुआ था। मुझे स्थानीय लोगों ने ही बताया कि वर्ष 1832 में यहां की एक झील के किनारे किसी ब्रिटिश अधिकारी ने एक पक्षी को गोली मार दी थी। उससे नाराज ग्रामीणों ने तुरंत ही उस ब्रिटिश व्यक्ति को गांव से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। यह कहानी लोककथा बन गई और इसी ने मेनार के पक्षी प्रेम और संरक्षण की आधारशिला रखी। समय के साथ मेनार के लोगों ने अपने तालाबों (ब्रह्म तालाब, धंड तालाब और खेरोड़ा तालाब) को जीवंत वेटलैंड्स में बदल दिया। इनके प्रयास रंग लाए। मेनार को आधिकारिक तौर पर राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।

जागरूक हैं स्थानीय निवासी: मेनार में पक्षियों को देखते हुए मेरी मुलाकात स्थानीय निवासी दर्शन मेनारिया से हुई, जो पक्षी-मित्र कहे जाते हैं। अपनी इस पहचान पर उन्हें गर्व है। हालांकि वह एक विद्यालय में अध्यापक

भी हैं। दर्शन कितना भी व्यस्त रहें, अगर उन्हें किसी पक्षी के चहचहाने की आवाज सुनाई पड़ती है तो वह पक्षियों के गीत सुनने में मगन हो जाते हैं। वे अपने छात्रों से भी कहते हैं कि पक्षियों के गीत को सुनो। जब छात्र पक्षी को देखेंगे और पहचानेंगे, तभी वे वास्तव में उनकी देखभाल करेंगे, उनके संरक्षण में अपना योगदान देंगे।

ऐसे किया जा रहा संरक्षण: मेनार में पक्षी संरक्षण केवल जागरूकता का विषय नहीं, वहां की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यहां धार्मिक रीति-रिवाजों का आयोजन झील के किनारों पर किया जाता है ताकि मानव और प्रकृति का संबंध मजबूत किया जा सके। यहां मछली पकड़ने और गर्मी में की जाने वाली खेती को स्थानीय लोगों ने अपनी इच्छा से बंद कर दिया है ताकि पक्षियों के ठहरने की जगहों को सुरक्षित रखा जा सके। झीलों से पानी भी बहुत कम निकाला जाता है। ग्रामीण अपनी जरूरतों के साथ पक्षियों की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखते हैं।

सरकारी प्रयासों की बात करें, तो राजस्थान वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी-मित्र हाथ में बाइनोक्यूलर्स (दूरबीन) लेकर सुबह-शाम को झीलों की निगरानी करते हैं। वे यहां आने वाले पक्षियों की गतिविधियों, पलायन पैटर्न को ऑब्जर्व करते हैं और खतरे की स्थिति में सावधान करते हैं। इस स्थानीय निगरानी ने न केवल सामान्य जलमुर्गियों को सुरक्षित रखने में मदद की है बल्कि उन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

बन चुकी है डॉक्यूमेंट्री फिल्म: फिल्म मेकर गुंजन मेनन ने मेनार की कहानी को अपनी अवॉर्ड-विनिंग डॉक्यूमेंट्री 'विंग्स ऑफ होप' (उम्मीदों के पर) में भी प्रस्तुत किया है। वह इसे 'विश्वसनीय नेतृत्व की कहानी' कहती हैं। इस फिल्म में उन्होंने बताया कि जमीनी प्रयासों से वह हासिल किया जा सकता है, जो अकसर बड़े पैमाने की नीतियों या बड़े बजट से नहीं मिलता।

बहरहाल, मेनार गांव देश ही नहीं, दुनिया भर के पक्षी प्रेमियों के लिए मिसाल बन गया है। *

जब करें घने कोहरे में ड्राइविंग

रखें इन बातों का खास ध्यान

सर्दी के मौसम में जब घना कोहरा छाया हो, तो विजिबिलिटी बहुत कम हो जाती है। ऐसे में ड्राइविंग बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है। थोड़ी सावधानी और कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप धुंध वाले मौसम में भी सेफ ड्राइव कर सकते हैं।

सजगता
विवेक कुमार

हालांकि अभी बहुत अधिक ठंड नहीं हो रही है लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा। हाड़ कंपा देने वाली भीषण ठंड और घने कोहरे में वाहन चलाना बहुत चुनौती भरा काम होता है। देर रात में या पौ फटने से पहले सुबह के समय कोहरे के कारण जब विजिबिलिटी का स्तर कम हो जाता है, तब ड्राइविंग करना और मुश्किल होता है। ऐसे में अगर आपके लिए कहीं जाना बेहद जरूरी है और आप अपने वाहन से जा रहे हैं, तो घने कोहरे में सुरक्षित सफर के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें।

ड्राइविंग पर फोकस्ड रहें: ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर किसी से बात करना, बगल में या पीछे सीट पर बैठे व्यक्ति के साथ लगातार बात करना, म्यूजिक सुनना, इन

तमाम कामों से आपका फोकस ड्राइविंग से हट सकता है। घने कोहरे में अगर आप ड्राइविंग कर रहे हैं तो आपका ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर ही केंद्रित रहना चाहिए। सामान्य दिनों में भी इस तरह की सावधानी बरतनी चाहिए।

स्पीड कम रखें: कोहरे में गाड़ी बहुत धीमी गति में चलानी चाहिए। इससे दुर्घटना होने की आशंका तो कम होती ही है, किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर नुकसान ज्यादा नहीं होता है। अपने आगे चलने वाले वाहन के बीच पर्याप्त गैप रखते हुए धीरे-धीरे ड्राइव करें। इससे आपको अचानक ब्रेक लगाने या गति बदलने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। कोहरे में गाड़ी ड्राइव करते समय अचानक अपनी लेन बदलने से भी बचें, क्योंकि विजिबिलिटी कम होने के कारण आपकी गाड़ी की गति और दिशा का अनुमान पीछे से आने वाले दूसरे वाहन का चालक नहीं लगा पाता है, इससे एक्सीडेंट की संभावना होती है।

सावधानी से गाड़ी मोड़ें: अगर आपको किसी मोड़ पर अपनी गाड़ी मोड़नी है तो अपनी गाड़ी की गति पहले से ही धीमी कर लें, क्योंकि कोहरे में बिल्कुल करीब की भी चीज दिखाई नहीं देती है। ऐसे में अगर गाड़ी मोड़ते समय गति तेज हुई तो दुर्घटना होने का डर रहता है। धुंध में ओवरटेकिंग करना बहुत खतरनाक हो सकता है, क्योंकि विजिबिलिटी बहुत कम होने से यह नहीं दिख पाता है कि आगे कोई वाहन है या नहीं और उसकी स्पीड कितनी है? इसलिए कोहरे में यथासंभव गाड़ी धीमे चलाएं और ओवर टेकिंग करने से बचें।

वाहन को रोक दें: यदि विजिबिलिटी बहुत ही कम हो, तो सड़क के किनारे सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक कर थोड़ा कोहरा छंटने का इंतजार करना चाहिए। अपनी गाड़ी को जब सड़क पर किनारे खड़ा करें तो कार की हैजार्ड लाइट चालू रखें ताकि सड़क पर चलने वाले दूसरे वाहन आपकी कार को देख सकें और सुरक्षित तरीके से बगल से निकल जाएं।

विंडोज-विंड स्क्रीन को साफ रखें: घने कोहरे और ओस की बूंदों के कारण विंडोज और विंड स्क्रीन पर लगा सीसा बार-बार धुंधला हो जाता है। ऐसे में विजिबिलिटी और भी कम हो जाती है। इससे बचने के लिए बीच-बीच में वाइपर चलाते रहें। कार के हीटर ऑन कर वाहन के अंदर से ही इन

पर जमने वाली भाप को कम किया जा सकता है। अधिक दिक्कत होने पर गाड़ी से उतर कर साफ कपड़े से इन्हें साफ करना चाहिए।

रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाएं: अपनी कार के पीछे लाल रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाने से आपके पीछे चलने वाले वाहन को आपके वाहन की स्थिति पता चलती रहती है। इससे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और दुर्घटना की आशंका से भी बचा जा सकता है। *

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में कई मनोहारी झीलें और नदियां हैं। इन्हीं में से एक तवी नदी न केवल अपने प्रवाह सौंदर्य के लिए, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक महत्ता और अपनी गोद में समेटे जैव विविधता के लिए भी जानी जाती है।

महज जलधारा ही नहीं जम्मू की सांस्कृतिक आत्मा है तवी नदी

नदी गाथा
वीना गौतम

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदियों के किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं और संस्कृतियां फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति आम लोगों की उदासीनता के चलते धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ियों को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती पर इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फलती-फूलती रहे। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और सुंदर नदी तवी, जम्मू शहर से होकर प्रवाहित होती है। जैसे किसी जीवंत शरीर में हृदय धड़कता है, वैसे ही जम्मू के लिए तवी की निरंतर बहती धारा है। यह नदी महज पानी की धार नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक पहचान का आधार स्तंभ है। स्थानीय डोगरा समाज में तवी को सूर्य पुत्री कहा जाता है यानी, एक ऐसी बेटी, जिसे सूर्य देव से जीवन मिला हो। यही उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का आधार माना जाता है।

तवी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू का मनोरम दृश्य

नदी का उद्भव और प्रवाह: तवी नदी शिवालिक पर्वतों की गोद से जन्मती है। सुधमाह महादेव के निकट डोडा जिले के कैलाश कुंड ग्लेशियर से इसका उद्गम माना जाता है। 4,220 मीटर की ऊंचाई से उतरकर यह नदी 141 किलोमीटर का सफर तय करके अखनूर के पास चिनाब नदी में मिल जाती है। अपने प्रवाह में यह पहाड़ी पत्थरों, झाड़ियों, घास के मैदानों और घाटियों को चीरते हुए आगे बढ़ती है। तवी नदी का प्रवाह इसे एक युवा नदी के रूप में दर्शाता है। क्योंकि इसका प्रवाह तेज, पथरीला और जल स्वच्छ होता है। गर्मियों में चूंकि हिमालय में बर्फ पिघलती है, इसलिए गर्मी के मौसम में इसमें पानी बढ़ जाता है, जबकि सर्दियों में नदी शांत और सक्रिय हो जाती है। इन दोनों मौसमों के विपरीत मानसून के आते ही तवी का शक्तिशाली और प्रचंड रूप देखने को मिलता है।

पौराणिक-धार्मिक महत्ता भी है बहुत: तवी का स्थान केवल भूगोल में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पौराणिक आख्यानों और लोक-साहित्य में भी यह रची बसी है। सूर्य पुत्री कही जाने वाली तवी की मान्यता, डोगरा राजवंश के इतिहास की सांस्कृतिक धुरी मानी जाती है। जम्मू का प्रतिष्ठित बहू-किला इसी नदी के किनारे स्थित है। इसी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू बागीचा, महामाया मंदिर और उसके पास की घाटियां, तवी को सौंदर्य की देवी का दर्जा देती हैं। तवी की वजह से ही ये स्थल इस शहर की आकर्षक धरोहरों में शामिल हैं। प्राचीन मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी तवी नदी की भूमिका हमेशा रही है। डोगरा राज परिवार के संस्कार, पूजा-तीर्थ, अर्पण और पितृ श्रद्धा इसी नदी के तट पर संपन्न होती है। छठ पर्व, मकर संक्रांति, डोगरा मेलों और विशेष पूजा अर्चनाओं का केंद्र तवी नदी के तट ही होते हैं। शिवरात्रि में यहां विशेष उत्सव संपन्न होता है। डोगरी लोकगीतों में बार-बार तवी नदी का जिक्र आता है। यहां एक उक्ति बहुत प्रचलित है, 'तवी दे पाणियां वर्गे, सच्चे ने जम्मू दे लोग।' यानी तवी के पानी की तरह ही जम्मू के लोगों का मन भी निर्मल है। तवी जम्मू की आत्मा है। इसके रिवर फ्रंट, घाटों और हरित पट्टियों के माध्यम से यह नदी एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में पुनर्जीवित हो रही है।

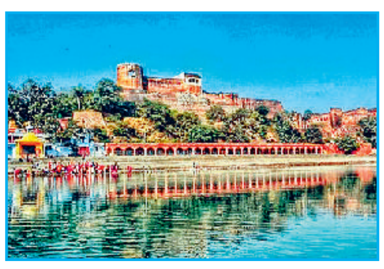

अखनूर फोर्ट के पास से प्रवाहमान तवी नदी

मौजूद है समृद्ध जैव विविधता: सिर्फ संस्कृति ही नहीं जम्मू क्षेत्र के पर्यावरण का भी मूल आधार तवी नदी ही है। इसकी घाटी में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। देवदार, चीड़, शीशम, क्राप, पॉपुलर तथा अनेक औषधीय पेड़ इसके किनारे पनपते हैं और इसको समृद्ध वनस्पति स्थल बनाते हैं। इसी तरह तवी घाटी में हिमालयी लंगूर, पहाड़ी लोमड़ी, जंगली बिल्ली और काला भालू जैसे जीव जंतु भी पाए जाते हैं। इनके अलावा यहां किंग फिशर, उल्लू, बगुले, पहाड़ी गौरैया जैसे पक्षी इसकी जैव विविधता की गाथा कहते हैं। इसी में ट्राउट, महाशीर और क्रॉप जैसी मछलियों की भी उपस्थिति इसे खास बनाती है।

कई तरह से है उपयोगी: तवी का तेज प्रवाह इसका पथरीला तल इसे देश की दूसरी नदियों की अपेक्षा बेहद स्वच्छ रखता है। यह चिनाब की प्रमुख सहायक नदी है और सिंध प्रणाली में जल उपलब्धता बढ़ाने पर अपना योगदान देती है। इसके तलों पर उगने वाली घास और वृक्ष, नदी के कटाव को रोकते हैं और जैविक स्थिरता बनाए रखते हैं। शहर के मध्य से गुजरते समय इसका घुमावदार प्रवाह बहुत आकर्षक लगता है। यह जम्मू शहर के पेय जल की प्रमुख स्रोत है। साथ ही इससे जम्मू, उधमपुर और अखनूर जिलों की कृषि भूमि सिंचित होती है।

चुनौतियां हैं कई: हर नदी की तरह तवी के भी कुछ संकट हैं, जैसे शहर का बहने वाला नाला, कचरा और सीवेज इसे बीमार बनाता है। अवैध रेत खनन इसे घायल करता है और शहरीकरण का बढ़ता बोझ इसके विस्तार को छीनता जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

श्याम बेनेगल की 'अंकुर' में दिखा जीवन यथार्थ

बिमल रॉय की यथार्थपरक फिल्म 'दो बीघा जमीन'

जीवन-समाज की सच्चाई दिखाता

यथार्थपरक समानांतर सिनेमा

फिल्म निर्माण के शुरुआती दिनों से ही फिल्मकारों ने जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि यह सामाजिक यथार्थ, पैरेलल सिनेमा में देखने को मिलता है। समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने वाले फिल्मकारों और हिंदी सिनेमा में इस ट्रेंड पर एक नजर।

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की झलक बहुत पुरानी बात है। ऐसी फिल्मों की नींव सन 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी, जब 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी. शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। वह किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है। इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। साल 1937 में महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' को भी समानांतर फिल्म की श्रेणी में ही रखा जाता है। समानांतर सिनेमा यानी पैरेलल सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा है।

समानांतर सिनेमा ने ली नई करवट: शुरुआती 1920-30 के दशक में भले ही समानांतर सिनेमा बनाने के कुछ प्रयोग किए गए, लेकिन तब ये परंपरा कुछ खास आगे नहीं बढ़ सकी। सन 1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर से करवट ली। इस दौर में सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद, वी. शांताराम जैसे दिग्गज फिल्मकारों ने इसे पल्लवित किया। इनकी फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप देखने को मिलती है। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई। कान फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म को 'ग्रांड प्रिक्स डू फेस्टिवल' पुरस्कार मिला। इस तरह कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी-'नीचा नगर'। समानांतर फिल्मों की इस परंपरा को श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन, गिरीश कासरवल्ली, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक जैसे फिल्मकारों ने आगे बढ़ाया।

दिखता है जीवन का यथार्थ: समानांतर सिनेमा में जीवन और समाज का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाया जाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, सामाजिक असमानता और बदलाव को दर्शाया जाता है। फिल्मों के कथानक में यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, दलितों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को दर्शकों के सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इन फिल्मों की यथार्थ परक कहानियां, आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी से जुड़ी होती हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं, जातिगत भेदभाव, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। ये फिल्में पारंपरिक सिनेमा की तरह मनोरंजन या सपनों की दुनिया पर नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाने पर बल देती हैं। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है। ये फिल्में भारतीय समाज के आइने का काम करती हैं।

दिखाई जाती है सामाजिक त्रासदी: समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर जाता है, लेकिन यह आधा सच ही है। क्योंकि समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है। समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। केवल त्रासदी और नकारात्मकता को ही समाज का यथार्थ नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया जाए, तो ही समानांतर सिनेमा को यथार्थवादी सिनेमा कहना ज्यादा उचित होगा। यदि इसमें 'अंकुर' जैसी फिल्म शामिल है तो 'हम साथ साथ है' को भी शामिल किया जा सकता है।

इन फिल्मकारों का रहा बड़ा योगदान: समानांतर और यथार्थपरक फिल्मों की बात करें, तो इस परंपरा को समृद्ध करने में कई फिल्मकारों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता प्राप्त की थी। इसके बाद बिमल रॉय ने 'बिराज बहू', 'देवदास', 'सुजाता' और 'बंदिनी' जैसी यथार्थपरक फिल्में बनाईं। ऐसी फिल्में बनाने वाले फिल्मकारों में गुरुदत्त भी थे। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 फिल्म्स' में जगह दी है। समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' से माना जाता है। ऐसे ही श्याम बेनेगल 1973 में 'अंकुर' बनाकर समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। सन 1976 में मृणाल सेन ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'मंथन' और 'भूमिका', मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा'। सत्यजीत रे की 'पाथेर पांचाली', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति'। इन सभी फिल्म मेकर्स का समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। *